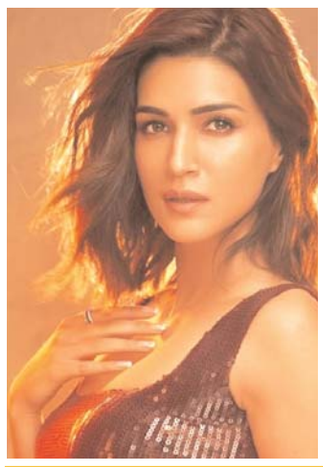

दैनिक सीहोर जिले का प्रथम दैनिक K ✌ K RNI No.MPHIN/2003/10309

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे | सीहोर जिले, होशंगाबाद संभाग एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा वर्ष-22 अंक-12 सीहोर, रविवार 23 फरवरी 2025 पृष्ठ-8 मूल्य -1 रूपये सम्पादक- कृष्णकान्त सक्सेना

दुनिया बंटी हुई है, जी20 की अखंडता बनाए रखना जरूरी; चीन ने मिलाए भारत के सुर में सुर

नई दिल्ली(ए)। ब्रिक्स समूह को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बेतुके बयानों के बीच भारत ने जी-20 समूह की अखंडता बनाए रखने पर जोर दिया है। चीन ने भी भारत के इस अह्वान पर सहमति जताई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ''ध्रुवीकृत'' वैश्विक स्थिति के बीच, जी-20 समूह की अखंडता बनाए रखने में भारत और चीन के संयुक्त प्रयासों पर शुक्रवार को जोर दिया। जयशंकर जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका की दो दिवसीय यात्रा पर जोहानिसबर्ग में हैं। उन्होंने यहां जी-20 विदेश मंत्रियों की बैठक के दौरान अपने चीनी समकक्ष वांग यी के साथ द्विपक्षीय बैठक के दौरान अपने संबोधन में कहा, ''हमें यह समझना चाहिए कि ध्रुवीकृत वैश्विक स्थिति में, दोनों देशों ने एक संस्था के रूप में जी-20 को संरक्षित और सुरक्षित रखने के लिए कड़ी मेहनत की है। यह अपने आप में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को प्रमाणित करता है।'' दक्षिण अफ्रीका 2025 के लिए जी-20 की मेजबानी कर रहा है, और इस बैठक से पूरे वर्ष के लिए निर्धारित कार्यक्रमों की श्रृंखला की शुरुआत होगी। अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के प्रमुख मंच के रूप में, जी-20 वैश्विक अर्थव्यवस्था को उसके समक्ष पेश आने वाली चुनौतियों से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जी-20 में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमेरिका, अफ्रीकी संघ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। चीनी विदेश मंत्रालय द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, वांग ने कहा कि पिछले वर्ष रूस के कजान में राष्ट्रपति शी चिनफिंग और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच सफल बैठक के बाद, दोनों देशों के बीच सभी स्तरों पर आदान-प्रदान व्यवस्थित तरीके से बहाल हो गया है।वांग ने कहा कि सीमा मुद्दों पर विशेष प्रतिनिधियों की बैठक में विशिष्ट मतभेदों को उचित तरीके से निपटाने पर आम सहमति बन गई है। वांग और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल भारत-चीन सीमा तंत्र के लिए विशेष प्रतिनिधि हैं। दोनों देशों के बीच पिछले वर्ष दिसंबर में मुलाकात हुई थी और वे सीमा पर शांति बनाए रखने तथा भारत-चीन संबंधों को स्थिर बनाए रखने के लिए कदम उठाने पर सहमत हुए थे।

भारत में पेट्रोल-डीजल होगा सस्ता, केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी ने दिया ये बड़ा संकेत

नई दिल्ली (आरएनएस)। देश में लंबे समय से लोगों की चली आ रही पेट्रोल-डीजल और गैस की कीमतों में कमी करने की मांग जल्द पूरी हो सकती है। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्रकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा है कि आने वाले समय में इन ईंधनों की कीमतों में कमी हो सकती है। उन्होंने बताया कि अमेरिका समेत अन्य देशों में तेल का उत्पादन बढाने की योजना बनाई जा रही है, जिससे वैश्विक बाजार में ईंधन की कीमतें घट सकती हैं और महंगाई पर भी काबू पाया जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में जीआईएस-2025 की तैयारियों का निरीक्षण किया

फूहड़पन बर्दाश्त नहीं... सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर के कंटेंट पर चाबुक चलाने की तैयारी में सरकार

मुंबई (आरएनएस)। कामेडी के नाम पर फूहड़पन बर्दाश्त नहीं करेगी केंद्र सरकार और इसके लिए कड़े कदम उठाने की पूरी तैयारी कर ली गई है। रणवीर इलाहाबदिया के बेहूदा कमेंट पर सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणियों के बाद केंद्र सरकार सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर के लिए कोड ऑफ कंडक्ट लाने की तैयारी में है। इसका पालन 5 से 50 लाख वाले फॉलोअर्स वाले इंफ्लूएंसर्स को करना होगा, ताकि भविष्य में इंडियाज गॉट लेटेंट जैसे शो से देशभर में लोगों की भावनाएं आहत न हो, साथ ही इंफ्लूएंसर्स को कंटेंट की रेटिंग भी देना अनिवार्य होगा। हाल ही में केंद्र सरकार की ओर से जारी नोटिस में कहा गया, सांसदों, विभिन्न वैधानिक संगठनों और आम जनता से OTT प्लेटफॉर्म्स व सोशल मीडिया पर अश्लील, अशिष्ट और अभद्र कंटेंट के प्रसार को लेकर शिकायतें मिली हैं। नैतिक संहिता के तहत OTT प्लेटफॉर्म पर ऐसे किसी भी कंटेंट को पब्लिश करने की अनुमति नहीं है, जो कानून के तहत निषिद्ध हो।

भागवत कथा के दौरान प्रेमिका से मिलने पहुंचा प्रेमी, लोगों ने करा दी शादी

पटना (आरएनएस)। बिहार के बांका से एक गजब मामला सामने आया है। जहां भागवत कथा के दौरान एक प्रेमी अपनी प्रेमिका से मिलने पहुंचा था। जब इस बारे में गांव के लोगों को पता चला तो उन्होंने मंदिर में दोनों की शादी करा दी। जिसकी वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही हैं।

जानकारी के मुताबिक, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के जरिए लड़का-लड़की बात करते थे। इसके बाद भागवत कथा में दोनों मिलने पहुंचे और ग्रामीणों ने मंदिर में दोनों की शादी करा दी। बता दें कि मामला सैलया गांव का है। गांव की 23 वर्षीय किरण कुमारी का प्रेम-प्रसंग फुल्लीडुमर के चौदाड़ निवासी 24 वर्षीय श्रवण कुमार से था।

फिर सताने लगा डर! चीन में मिला कोरोना जैसा नया वायरस, जानवर से इंसान में फैलने का खतरा

नई दिल्ली(आरएनएस)। चीन में कोरोना की तरह एक और नया वायरस मिला है। इसके जानवर से इंसान में फैलने का खतरा है। यह नया वायरस चीन के वुहान लैब में मिला है। कोरोना ने जो तबाही मचाई थी, उसे भला कौन भूल सकता है। इस वायरस के मिलने से वहां एक बार फिर से हड़कंप मच गया है और लोगों को फिर वही डर सताने लगा है। ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन के वुहान इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी के रिसर्चर्स ने इस नए वायरस की खोज की है। यह वायरस मानव स्वास्थ्य के लिए एक नए खतरे का संकेत है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक, यह वायरस उन्हीं रिसेप्टर के जरिए सेल यानी कोशिकाओं में एंट्री करता है, जैसे कोरोना वायरस करता है। यह वायरस मनुष्यों और अन्य स्तनधारियों के शरीर में पाए जाने वाले प्रोटीन से जुड़कर कोशिकाओं को संक्रमित करता है। इस नए वायरस को मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम यानी MERS नाम से भी जाना जाता है।

रिपोर्ट के मुताबिक, 2012 से मई 2024 तक लगभग 2600 लोगों में MERS वायरस की पुष्टि की गई है। इस वायरस ने जिन लोगों को संक्रमित किया, उन में से 36 फीसदी लोगों की मौत हो गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन की वेबसाइट के मुताबिक, इसके अधिकतर मामले सऊदी अरब में पाए गए हैं। वुहान वायरस रिसर्च सेंटर चमगादड़ों में पाए जाने वाले कोरोना वायरस पर अपने काम के लिए जाना जाता है। कोरोना वायरस भी चीन के वुहान लैब से ही लीक हुआ था। इसके बाद इसने पूरी दुनिया में तबाही मचाई थी।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज चौहान को फ्लाइट में टूटी सीट पर करनी पड़ी यात्रा, बोले- नहीं सुधरी एयर इंडिया

नई दिल्ली(आरएनएस)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने एयर इंडिया की खराब सेवाओं पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। भोपाल से दिल्ली जाने वाली एयर इंडिया की फ्लाइट AI436 में यात्रा करते समय उन्हें आवंटित सीट टूटी और अंदर से धंसी हुई मिली, जिससे उन्हें असुविधा का सामना करना पड़ा। मंत्री ने अपनी इस परेशानी को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा करते हुए एयर इंडिया की बदइंतजामियों पर सवाल उठाए।शिवराज सिंह चौहान, जो पूसा किसान मेले का उद्घाटन करने के लिए दिल्ली आ रहे हैं, साथ ही कुरुक्षेत्र में मीटिंग और चंडीगढ़ में किसान संगठन के प्रतिनिधियों से चर्चा करने का कार्यक्रम भी निर्धारित है। एयर इंडिया की इस असुविधाजनक व्यवस्था पर मंत्री का गहरा नाराजगी दर्ज की गई है।

जीआईएस-2025 में आतिथ्य का नया आयामः भोपाल में पहली बार टेंट सिटी

भोपाल (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व और मार्गदर्शन में भोपाल में आयोजित हो रही ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट आतिथ्य में भी नये आयाम स्थापित करेगी। भोपाल में पहली बार रन ऑफ कच्छ और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की तर्ज पर टेंट सिटी स्थापित की गई है। 108 फाइव-स्टार लेवल के रूम्स वाली यह टेंट सिटी निवेशकों और प्रतिनिधियों को मध्यप्रदेश की विशिष्ट आतिथ्य परंपरा का अनुभव कराएगी।

यह प्रयोग सफल रहता है, तो इसे स्थायी रूप से विकसित करने की योजना बनाई जाएगी, जिससे मध्यप्रदेश पर्यटन को नई गति मिलेगी और भोपाल को एक नया आकर्षण केंद्र मिलेगा।

मध्यप्रदेश के जायके और संस्कृति का संगम

यह टेंट सिटी न केवल निवेशकों के लिए ठहरने का विशेष स्थान होगी, बल्कि इसमें MP स्पेशल फूड मेन्यू भी तैयार किया गया है, जिसमें मालवा, बुंदेलखंड, बघेलखंड और निमाड़ के पारंपरिक स्वाद शामिल हैं।

पर्यटन और निवेश की नई संभावनाएं

जीआईएस-2025 के दौरान यह अनूठा अनुभव निवेशकों और उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश में पर्यटन की बढ़ती संभावनाओं से परिचित कराएगा। यह पहल न केवल अर्थव्यवस्था को मजबूती देगी बल्कि पर्यटन के क्षेत्र में भी नए अवसर खोलेगी। जीआईएस-2025 के बाद इस प्रयोग को स्थायी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना पर विचार किया जा रहा है, जिससे भोपाल पर्यटन के मानचित्र पर एक नए आकर्षण के रूप में उभरेगा।

उत्तराखंड - सीएजी रिपोर्ट ने खोल दी पोल, पैसा था वन संरक्षण के लिए और खरीदी गई लैपटॉप-टैबलेट के साथ कई अन्य चीजें

नई दिल्ली ,(आरएनएस)। उत्तराखंड विधानसभा के बजट सत्र से दौरान सदन में सीएजी की रिपोर्ट पेश की गई। इस रिपोर्ट में बड़े पैमाने पर वित्तीय अनियमितताओं का खुलासा हुआ है। रिपोर्ट में बजट की भारी गड़बड़ी सामने आई है, जिसमें करोड़ों रुपये का दुरुपयोग और गलत तरीके से रकम को खर्च करने के मामले सामने आए हैं।इस रिपोर्ट में वन संरक्षण के लिए खर्च किए गए फंड में गड़बड़ी देखने को मिल रही है। रिपोर्ट के अनुसार, वन विभाग द्वारा वन संरक्षण के लिए निर्धारित फंड का इस्तेमाल लैपटॉप, टैबलेट, आईफोन, फ्रीज और ऑफिस के लिए सजावट के सामान खरीदने में किया गया। यह रकम करोड़ों रुपये में थी, जो इस उद्देश्य के लिए निश्चित रूप से अनुचित तरीके से खर्च की गई। 2022 के रिकॉर्ड की जांच में कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं, जहां कैंपा (प्रतिपूरक वनरोपण निधि प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण) फंड का इस्तेमाल वनीकरण कार्यों के बजाय अन्य कामों के लिए किया गया।

सीएम रेखा गुप्ता ने पीएम मोदी से की मुलाकात, दिल्ली की बेटी को जिम्मेदारी सौंपने का जताया आभार

नई दिल्ली (आरएनएस)। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से उनके आवास पर मुलाकात की, जबकि उनके कैबिनेट मंत्रियों ने सड़क पर उतरकर गड्ढों वाली सड़कों की मरम्मत और शहर भर में लंबित परियोजनाओं को परखा। दिल्ली की सत्ता संभालने के बाद रेखा गुप्ता की पीएम मोदी से पहली मुलाकात है। इस दौरान इन दोनों नेताओं ने दिल्ली के विकास पर चर्चा की।उनके एक सहयोगी ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के दौरान, सीएम गुप्ता ने दिल्ली की बेटी को लोगों की सेवा करने का मौका देने के लिए धन्यवाद दिया।पीएम के आवास के लिए रवाना होने से पहले, सीएम गुप्ता ने सुबह शालीमार बाग में अपने घर की पहली मंजिल की बालकनी से अपने शुभचिंतकों का अभिवादन किया।सीएम गुप्ता ने घोषणा की कि पीएम मोदी से मिल कर वो शहर की सभी महिलाओं और बेटियों की ओर से शहर की सेवा के लिए दिल्ली की बेटी को चुनने के लिए आभार व्यक्त करेंगी। जय श्री राम और भारत माता की जय के नारों के साथ उन्होंने संबोधन समाप्त किया।बाद में, मुख्यमंत्री ने बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की और दिल्ली में खोदी गई सड़कों, क्षतिग्रस्त सड़कों और यातायात संबंधित मुद्दों पर चर्चा की और सुधार के निर्देश दिए। पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा ने बारापुला चरण-3 परियोजना का निरीक्षण किया। दक्षिण पूर्वी दिल्ली में सराय काले खां के पास पत्रकारों से बात करते हुए वर्मा ने कहा कि उन्होंने दिल्ली की सड़कों पर अतिक्रमण हटाने के लिए सख्त निर्देश भी जारी किए हैं।

इज़राइल से जल संरक्षण को लेकर रुडी और इजरायली राजदूत के बीच हुई बैठक

नई दिल्ली, (आरएनएस) । जल संसाधन संबंधी संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष एवं सांसद राजीव प्रताप रुडी ने भारत में इज़राइल के राजदूत रियुवेन अजार से एक महत्वपूर्ण बैठक की। इस बैठक का उद्देश्य जल संसाधन प्रबंधन और पुनर्चक्रण के क्षेत्र में इज़राइल की उन्नत तकनीकों का अध्ययन करना था, जिससे भारत में जल संरक्षण और प्रबंधन से संबंधित संभावनाओं का आकलन किया जा सके।बैठक के दौरान, इज़राइल में जल पुनर्चक्रण, ड्रिप सिंचाई, ओस से सिंचाई, तथा शुष्क क्षेत्रों में जल उपयोग की नवीनतम प्रौद्योगिकियों पर चर्चा हुई। इज़राइल जल पुनर्चक्रण में वैश्विक अग्रणी है और वहां लगभग 90त्न अपशिष्ट जल का पुन: उपयोग किया जाता है। यह प्रणाली जल सुरक्षा बढ़ाने और कृषि उत्पादकता सुधारने में सहायक सिद्ध हुई है। इस दौरान श्री रुडी ने उन्हें बताया कि बिहार के सारण प्रमंडल के लिए 4000 करोड़ की सिंचाई और 2000 करोड़ के बाढ़ प्रबंधन योजना, कुल 6 हजार करोड़ की योजना तैयार की जा चुकी है, जो आधुनिक तकनीक से लैस होगी। इस पहल के तहत सारण जिला भारत का पहला बाढ़ और सिंचाई प्रबंधन मॉडल बनेगा। बैठक के दौरान इज़राइली राजदूत ने बिहार, विशेष रूप से छपरा आने की इच्छा व्यक्त की। जल संसाधन संबंधी संसद की स्थायी समिति के अध्यक्ष राजीव प्रताप रुडी ने प्रधानमंत्री किसान सिंचाई योजना, पेयजल, स्वच्छता और कृषि सिंचाई से जुड़ी विभिन्न योजनाओं पर चर्चा की।

राजीव प्रताप रुडी ने बताया कि जल संसाधन समिति इन आधुनिक तकनीकों और जल प्रबंधन मॉडल का अध्ययन कर उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन करेगी।

भारतीय सेना का दल भारत-जापान संयुक्त सैन्य अभ्यास 'धर्म गार्जियन' में भाग लेने के लिए जापान रवाना

रीवा (ए)। भारतीय सेना का एक दल भारत-जापान संयुक्त सैन्य अभ्यास 'धर्म गार्जियन' में भाग लेने के लिए जापान रवाना हो गया। यह अभ्यास 24 फरवरी से 9 मार्च 2025 तक जापान के ईस्ट फूजी युद्ध प्रशिक्षण क्षेत्र में आयोजित होगा। यह जानकारी रक्षा मंत्रालय ने दी। 'धर्म गार्जियन' एक वार्षिक सैन्य अभ्यास है जो बारी-बारी से भारत और जापान में आयोजित किया जाता है। इसका पिछला संस्करण फरवरी-मार्च 2024 में राजस्थान में हुआ था। इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य शहरी युद्ध और आतंकवाद विरोधी अभियानों में भारत और जापान की सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल और समन्वय स्थापित करना है।

भारतीय दल में 120 सैनिक शामिल हैं जिनमें से अधिकांश मद्रास रेजिमेंट के जवान हैं। इनके साथ अन्य यूनिट्स के सैनिक भी भाग ले रहे हैं। जापान की ग्राउंड सेल्फ डिफेंस फोर्स के 34वें इन्फैंट्री रेजिमेंट के समान संख्या में सैनिक इस अभ्यास में शामिल होंगे।

इस दौरान दोनों सेनाएं संयुक्त रणनीति, सामरिक अभ्यास, शारीरिक फिटनेस और आपदा प्रतिक्रिया रणनीतियों पर जोर देंगी। इससे युद्ध कौशल विकसित करने, सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने और दोनों सेनाओं के बीच आपसी समन्वय को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह अभ्यास अक्टूबर 2024 में भारत के थलसेना प्रमुख की जापान यात्रा के बाद रक्षा सहयोग को और मजबूत करेगा। भारत और जापान इस अभ्यास के जरिए क्षेत्रीय सुरक्षा, शांति और स्थिरता के प्रति अपनी साझी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। यह दोनों देशों की मजबूत सैन्य साझेदारी और सांस्कृतिक संबंधों को और गहरा करेगा।

के.ए. पॉल ने संगारेड्डी में छह वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म पर जताई कड़ी निंदा, जल्द न्यायिक कार्यवाही की मांग

नई दिल्ली (आरएनएस)। डॉ. के.ए. पॉल ने इस सप्ताह संगारेड्डी में हुई छह वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म की जघन्य घटना की कड़ी निंदा की है और इसे अमानवीय व भयावह अपराध करार दिया है। उन्होंने स्थानीय पुलिस—एसपी, डीएसपी और सीआई जल्द कार्यवाही की सराहना की, जिन्होंने अपराधियों को शीघ्र गिरफ्तार किया। साथ ही, उन्होंने देशभर में सक्रिय और जवाबदेह कानून प्रवर्तन को प्रोत्साहित करने के लिए इन अधिकारियों को पदोन्नति देने की मांग की। डॉ. पॉल ने घोषणा की कि वह 25 फरवरी को तेलंगाना हाई कोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश के समक्ष अंतिम दलीलें पेश करेंगे। वे इस मामले में त्वरित न्याय दिलाने के साथ-साथ न्यायिक सुधारों की आवश्यकता को उजागर करेंगे, ताकि ऐसे अपराधों को रोका जा सके, पीड़ितों को सुरक्षा मिल सके और बलात्कारियों को जल्द से जल्द सजा दी जाए। इसी के साथ उन्होंने भारतीय न्याय प्रणाली और कानून प्रवर्तन में व्यापक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया।

मध्यप्रदेश बन रहा है सीएम डॉ. यादव के नेतृत्व में ग्लोबल स्टार्ट-अप हब

भोपाल (ए.)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विजन है कि स्टार्ट-अप को अधिक से अधिक प्रोत्साहन दें, जिससे भारत के युवा नौकरी करने वाले से ज्यादा नौकरी देने वाले बनें। आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को साकार करने में इस विजन को मध्यप्रदेश में मूर्तरूप देने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में सरकार आगे बढ़कर कार्य कर रही है। हाल ही में मध्यप्रदेश स्टार्ट-अप नीति को मंजूरी इसी का परिणाम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि नई स्टार्ट-अप नीति बन जाने से जीआईएस-2025 प्रदेश को ग्लोबल स्टार्ट-अप हब के रूप में स्थापित करने का बड़ा अवसर साबित होगी। युवा उद्यमियों को ग्लोबल मंच मिलेगा और लाखों रोजगार सृजित होंगे।

नई नीति से स्टार्ट-अप ईको-सिस्टम बनेगा मजबूत

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का मानना है कि गतिशील स्टार्ट-अप ईको सिस्टम राज्य की आर्थिक प्रगति और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने में अहम भूमिका निभाएगा। प्रदेश की नई स्टार्ट-अप नीति से स्टार्ट-अप्स उद्यमियों के समक्ष आने वाली संभावित चुनौतियों का समाधान होगा। इस नीति का मुख्य उद्देश्य राज्य में स्टार्ट-अप्स की संख्या को दोगुना करना है। वर्तमान में सक्रिय स्टार्ट-अप्स की संख्या 5 हजार से बढ़ाकर 10 हजार करने का लक्ष्य रखा गया है। इससे 1.10 लाख से अधिक रोजगार के अवसर सृजित होंगे।

प्रारंभिक सहायता के लिए 100 करोड़ रुपए का सीड कैपिटल

स्टार्ट-अप्स के युवा उद्यमियों के लिए सबसे बड़ी चुनौती प्रारंभिक पूंजी की व्यवस्था करना होती है। राज्य

सरकार युवाओं की इस बाधा को दूर करने के लिए 100 करोड़ रुपए का सीड कैपिटल फंड स्थापित कर रही है। यह कोष उभरते स्टार्ट-अप्स को उनके शुरुआती चरणों में वित्तीय सहायता प्रदान करेगा। इससे वे अपने स्टार्ट-अप का विस्तार कर सकेंगे साथ ही विस्तार की चुनौतियों का सामना कर सकेंगे।

मेगा इनक्यूबेशन सेंटर और नवाचार को मिलेगा बढ़ावा

नई नीति में राज्य में मेगा इनक्यूबेशन सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं। इनसे स्टार्ट-अप्स को आवश्यक संसाधन, मार्गदर्शन और ग्लोबल बाजार तक पहुंचने में सहायता प्रदान करेंगे। नई नीति में बौद्धिक संपदा सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी गई है। इसके लिये घरेलू पेटेंट के लिए 5 लाख रुपये और अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट के लिए 20 लाख रुपए तक की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। इससे स्टार्ट-अप्स को नवाचार करने और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बने रहने में मदद मिलेगी।

एंटरप्रेन्योर-इन-रेजिडेंस ईआईआर प्रोग्राम और कौशल विकास सहायता

राज्य में स्टार्ट-अप्स को प्रोत्साहित करने के लिए एंटरप्रेन्योर-इन-रेजिडेंस ईआईआर प्रोग्राम लागू किया जा रहा है। इसमें चुने गए स्टार्ट-अप्स को कर्मचारियों के कौशल विकास के लिए 10 हजार रुपए प्रति माह (अधिकतम एक वर्ष के लिए) तक की वित्तीय सहायता दी जाएगी। साथ ही प्रत्येक नए कर्मचारी पर 13 हजार रुपए तक का अनुदान दिया जाएगा। इसे स्टार्ट-अप्स मानव संसाधनों के प्रशिक्षण और विकास में निवेश कर सकेंगे।

किराये पर सब्सिडी और महिला उद्यमिता को बढ़ावा

स्टार्ट-अप्स के परिचालन खर्चों को कम करने के लिए नीति के तहत किराया सहायता योजना लागू की गई है। स्टार्ट-अप्स को 50 प्रतिशत तक किराया भत्ता (अधिकतम 10 हजार रुपए प्रति माह) प्रदान किया जाएगा। इसके साथ ही महिला उद्यमियों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा। नई नीति के अनुसार, राज्य में 47% महिला-नेतृत्व वाले स्टार्ट-अप्स को प्राथमिकता दी जाएगी।

रणनीतिक क्षेत्रों में स्टार्ट-अप्स को प्राथमिकता

नीति में कृषि, फूड प्रोसेसिंग, डीप टेक, बॉयोटेक और नवीनतम तकनीकों के क्षेत्र में स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है। इससे राज्य में विविध और सशक्त स्टार्ट-अप ईको सिस्टम विकसित होगा, जिससे प्रदेश के आर्थिक विकास में सहायता मिलेगी।

प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिये प्रशिक्षण केन्द्र

भोपाल(आरएनएस)। सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से प्रदेश में 3 स्तरों पर ड्रायविंग प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जा रही है। यह प्रशिक्षण केन्द्र प्रादेशिक, संभागीय और जिला स्तर पर संचालित करने का निर्णय लिया गया है। सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा इंदौर और छिंदवाड़ा में प्रादेशिक स्तर के प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। छतरपुर में प्रादेशिक स्तर का प्रशिक्षण केन्द्र की भारत सरकार द्वारा स्वीकृति मिल गयी है। इसके साथ ही सिंगरौली, धार, सतना, सीधी, रायसेन, रीवा, दमोह, देवास एवं विदिशा में जिला स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण कार्य जारी है। भोपाल, छतरपुर और बैतूल में स्वीकृत प्रादेशिक ड्रायविंग ट्रेनिंग सेंटर का निर्माण कार्य जारी है। प्रदेश में प्रतिवर्ष 78 प्रतिशत सड़क दुर्घटनाएँ वाहन चालक की गलती के कारण होती हैं। इस उद्देश्य से प्रदेश में ड्रायविंग ट्रेनिंग सेंटर संचालित करने का निर्णय लिया गया है।

उद्योगपतियों को मिलेगी कई सहुलियतें : ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

बिजली बिलों में विभिन्न प्रकार की छूटों का प्रावधान

भोपाल (ए.)। प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये ऊर्जा विभाग द्वारा बिजली बिलों में और उच्च दाब कनेक्शनों के लिये विभिन्न प्रकार की छूटों का प्रावधान किया गया है। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार उद्योगपतियों को ऊर्जा विभाग द्वारा कई सहूलियतें दी जा रही हैं। श्री तोमर ने कहा है ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 से प्रदेश में उद्योगीकरण को गति मिलेगी।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बताया है कि उच्च दाब कनेक्शन लेने वाले नए उद्योगों के लिये 33 केव्ही पर 5 वर्ष, 132 केव्ही पर 7 वर्ष और 220 केव्ही पर 10 वर्ष के लिये विद्युत शुल्क से छूट मिलेगी। नए उच्च दाब कनेक्शनों को ऊर्जा प्रभार में 20 प्रतिशत अथवा 1 रूपये प्रति यूनिट में जो भी कम हो, की 5 वर्ष के लिये छूट दी जाएगी। कैप्टिव पॉवर उपयोगकर्ता को कैप्टिव उत्पादन कम कर विद्युत वितरण कम्पनी से बिजली खरीदने पर बढ़ी हुई खपत में 2 रूपये प्रति यूनिट की छूट 5 वर्ष तक के लिये दी जाएगी। विद्यमान उच्च दाब उपभोक्ताओं को बढ़ी हुई यूनिटों पर ऊर्जा प्रभार में 10 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

कार्पोरेट स्तर पर रिलेशनशिप मैनेजर्स नियुक्त

उच्च दाब उपभोक्ताओं को ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से 14 दस्तावेजों के स्थान पर मात्र 2 दस्तावेजों के आधार पर 7 दिन में नए कनेक्शन दिये जा रहे हैं। शिकायतों के त्वरित निराकरण के लिये कार्पोरेट स्तर पर रिलेशनशिप मैनेजर्स नियुक्त किये गये हैं। विद्युत शुल्क का युक्तियुक्तकरण किया गया है। इससे माईन्स, सीमेंट उद्योग और स्टोन क्रशर को छोड़कर सभी अन्य उद्योगों पर एक समान 9 प्रतिशत की दर से विद्युत शुल्क लगेगा। पहले उच्च दाब उद्योगों पर 15 प्रतिशत शुल्क लगता था। उचित पॉवर फेक्टर बनाएं रखने के लिये बिल में छूट और अग्रिम, शीघ्र और ऑनलाइन बिल भुगतान में प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया गया है। वद्युित कनेक्शन में नाम परिवर्तन और भार परिवर्तन की ऑनलाइन सुविधा दी गई है। वर्तमान में उच्च दाब औद्योगिक श्रेणी के उपभोक्ताओं को वित्तीय वर्ष 2023-24 में 1886 करोड़ रूपये की छूट दी गई है। ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने के लिये ग्रीन एनर्जी टैरिफ लागू किया गया है।

भोपाल। उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाहा ने भोपाल हाट में आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ कर राष्ट्रीय प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने संत श्रद्धानंद सरस्वती की जयंती और कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि पर किया नमन

भोपाल(आरएनएस)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संत स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित किए है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि स्वामी जी ने संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा, धर्म और शिक्षा के प्रति समर्पित किया। वेदों की शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने, समाज सुधार करने और स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने के लिए वे सदैव स्मरणीय रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि संत श्रद्धानंद सरस्वती का जीवन हमें सत्य, सेवा और समर्पण की प्रेरणा देता है। उनके आदर्शों पर चलते हुए समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मुख्यमंत्री ने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की धर्मपत्नी और स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

नहीं थम रही राजधानी से गुजरने वाली रनिंग ट्रेनो में चोरी, लूट की वारदातें

हाथ से झपटा मोबाइल, जेब से उड़ाया पर्स, सूटकेस चोरी

भोपाल(ए)। राजधानी से गुजरने वाली रनिंग ट्रेनों में मुसाफिरो के साथ चोरी और लूट की वारदातो पर अकुंश नहीं लग पा रहा है। बैखौफ बदमाशो ने अलग-अलग ट्रैनो के यात्रियो को अपना शिकार बनाते हुए कीमती माल उड़ा दिया। जीआरपी से मिली जानकारी के अनुसार दमोह के रहने वाले कपिल साहू ने अपनी शिकायत में बताया कि वह रीवांचल एक्स के जनरल कोच में भोपाल से रानी कमलापति की यात्रा कर रहे थे। सफर के दौरान वह कोच के गेट पर बैठकर

मोबाइल चला रहे थे। भोपाल से करीब 2 किमी दूर निकलने पर रेलवे ट्रैक पर खड़े युवक ने तेजी से कपिल के हाथ में पकड़े 10 हजार कीमत के फोन पर झपट्टा मारते हुए उनका मोबाइल गिरा दिया और उसे उठाकर फरार हो गया। वहीं रामदास पंथी पिता (61) ने जीआरपी को बताया की वह पुष्प विहार कॉलोनी बीना में रहते हैं। प्रतापगढ़ एक्स में पीछे के जनरल कोच में वह अपनी पत्नि कुसुम पंथी के साथ सफर कर रहे थे। यात्रा के दोरान भोपाल रेलवे स्टेशन में चढ़ने के बाद उन्होंने देखा तो उनकी जेब में रखा पर्स गायब था। उन्होनें संदेह जताया की कोच में चढ़ते समय भीड़भाड़ होने के दौरान ही अज्ञात जेबकट ने उनका पर्स पार कर दिया। चोरी गये पर्स में पत्नी का 65 हजार कीमत को सोने का मंगलसुत्र, नगदी सहित अन्य जरुरी दस्तावेज रखे हुए थे।

टैक्सी ड्रायवर ने बीच सड़क पर खुद को लगाई आग, हुई मौत

जबलपुर टूर से वापस आया था मृतक, 8 महीने पहले हुई थी शादी

भोपाल(ए)। राजधानी भोपाल के शाहपुरा थाना इलाके के कजलीखेड़ा में एक निजी कॉलेज के पास अलसुबह करीब साढ़े पॉच बजे एक टैक्सी ड्रायवर ने खुद पर डीजल छिड़ककर आग लगा ली। दर्दनाक हादसे में उसकी मौके पर ही मौत हो गई। उसकी शादी आठ महीने पहले ही हुई थी, मृतक ने यह खौफनाक आत्मघाती कदम क्यो उठाया फिलहल इसके कारणो का खुलासा नहीं हो सका है। मिली जानकारी के अनुसार कजलीखेड़ा कोलार में रहने वाला 22 साल का मधुर जाटव पिता रामबाबू जाटव निजी ट्रैवल्स की कार चलाता था। परिवार वालो का कहना है कि मधुर दो दिन पहले सवारी लेकर जबलपुर जाने का कहकर निकला था। इसके बाद शुक्रवार रात को पिता रामबाबू से उसकी फोन पर बातचीत हुई थी। उस समय उसने ठीक से की और किसी तरह की परेशानी या तनाव का जिक्र नहीं किया था। इसके बाद शुक्रवार अलसुबह 5:30 बजे पुलिस ने ट्रैवल्स के मालिक को फोन कर मधुर के आग लगाकर आत्महत्या करने की सूचना दी। ट्रैवल्स मालिक ने फौरन ही इसकी जानकारी मधुर के पिता रामबाबू को दी। सूचना पाकर पहुंचे परिवार वालो ने पुलिस को बताया की मधुर की शादी आठ महीने पहले ही हुई थी। उस समय वह मंत्रालय के एक अधिकारी का वाहन चलाता था। उसके पत्नी से भी किसी तरह की अनबन या पारिवारिक तनाव या अन्य किसी भी तरह के पारिवारिक विवाद की जानकारी सामने नहीं आई है। हालांकि परिवार वालो ने आशंका जताते हुए कहा है की मधुर टूर पर जबलपुर गया था, और वहां से लौटते ही उसने यह कदम उठाया है। इससे संदेह है की टूर के दौरान ही उसके साथ कोई ऐसी बात हुई है, जिसके बाद उसने यह कदम उठा लिया। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर आगे की जांच शुरू कर दी है।

09308/09307 भोपाल-उज्जैन-भोपाल शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन 10-10 ट्रिप

भोपाल मंडल के संत हिरदाराम नगर से होकर गुजरेगी

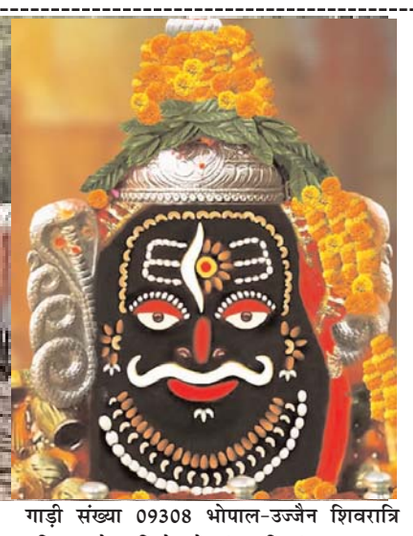

भोपाल (निप्र)। रेल प्रशासन द्वारा उज्जैन एवं सीहोर में शिवरात्रि पर्व के अवसर पर श्रद्धालुओं एवं यात्रियों को सुगम, सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गाड़ी संख्या 09308/09307 भोपाल-उज्जैन-भोपाल शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन (10-10 ट्रिप) चलाई जा रही है, जो भोपाल मंडल के संत हिरदाराम नगर पर ठहरकर गंतव्य तक जाएगी।

गाड़ी संख्या 09308 भोपाल-उज्जैन शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन (10 ट्रिप)

गाड़ी संख्या 09308 भोपाल-उज्जैन शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन दिनांक 23 फरवरी 2025 से 04 मार्च 2025 तक प्रतिदिन भोपाल स्टेशन से रात 22.20 बजे प्रस्थान कर, रात 22.43 बजे संत हिरदाराम नगर एवं मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए अगले दिन 02.20 बजे उज्जैन स्टेशन पहुंचेगी।

गाड़ी संख्या 09307 उज्जैन-भोपाल शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन (10 ट्रिप)

गाड़ी संख्या 09307 उज्जैन-भोपाल शिवरात्रि परिक्रमा मेला विशेष ट्रेन दिनांक 23 फरवरी 2025 से 04 मार्च 2025 तक प्रतिदिन शाम 17.35 बजे उज्जैन स्टेशन से प्रस्थान कर, रात 21.05 बजे संत हिरदाराम नगर एवं मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए रात 21.35 बजे भोपाल स्टेशन पहुंचेगी।

गाड़ी के हाल्ट:

रास्ते में यह गाड़ी दोनों दिशाओं में उज्जैन जंक्शन, मकसी जंक्शन, शुजालपुर, सीहोर, संत हिरदाराम नगर, भोपाल जंक्शन स्टेशनों पर रुकेगी।

कोच संरचना:

इस विशेष ट्रेन में 10 शयनयान श्रेणी एवं 04 सामान्य श्रेणी के डिब्बे सहित कुल 16 डिब्बे होंगे। यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा NTES/139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी प्राप्त करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें। उक्त विशेष ट्रेनों के विस्तृत समय और ठहराव की विस्तृत जानकारी हेतु कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाएं या NTES ऐप डाउनलोड करें।

विजयनगर सिंधी पंचायत ने रामधुन के साथ महाकुंभ में जाने वाले श्रद्धालुओं के जत्थे को रवाना किया

भोपाल,(आरएनएस)। विजयनगर स्थित सिंधी समाज उत्थान पंचायत ने महाकुंभ में जाने वाले श्रद्धालुओं के जत्थे को रवाना किया। पंचायत के अध्यक्ष कैलाश शर्मा और सचिव कैलाश आसवानी ने रामधुन के साथ श्रद्धालुओं को विदाई दी। उन्होंने श्रद्धालुओं की सफल और मंगलमय यात्रा के लिए प्रार्थना की।पंचायत के पदाधिकारियों ने कामना की कि सभी श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में स्नान कर अपना जीवन सफल बनाएं। इस विदाई समारोह में पंचायत के संरक्षक रमेश भंभानी विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाज के लोगों ने भाग लिया और श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं।

टैक्सी चालक ने बीच सड़क पर खुद को आग लगाई,मौके पर हुई मौत

भोपाल(आरएनएस)। कजलीखेड़ा में प्राइवेट कॉलेज के पास शनिवार सुबह 5:30 बजे टैक्सी चालक ने डीजल छिड़ककर खुद को आग लगा ली। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। वह टूर पर जबलपुर गया था, वहां से लौटते ही यह कदम उठाया है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। खुदकुशी के कारणों का अभी खुलासा नहीं हो सका है। मधुर जाटव (22) पुत्र रामबाबू जाटव कजलीखेड़ा कोलार में रहता था। एक प्राइवेट ट्रैवल्स की कार चलाता था। उसके पिता ने बताया कि बेटा दो दिन पहले जबलपुर गया था। सवारी छोड़ने का बोलकर निकला था। शुक्रवार रात नौ बजे पिता से उसकी कॉल पर बात हुई थी। तब उसने सामान्य बात की, किसी तरह की कोई परेशानी का जिक्र नहीं किया।पिता रामबाबू ने बताया कि सुबह 5:30 बजे ट्रैवल्स के मालिक को पुलिस ने बेटे द्वारा आग लगाकर खुदकुशी की सूचना दी।

मप्र चिकित्सक महासंघ का आंदोलन स्थगित

भोपाल (आरएनएस)। शासकीय चिकित्सक महासंघ, मध्य प्रदेश ने चिकित्सकों के मुद्दों को लेकर चल रहे आंदोलन को आगामी सूचना तक स्थगित कर दिया है। यह निर्णय महासंघ के पदाधिकारियों और प्रमुख सचिव संदीप यादव तथा आयुक्त स्वास्थ्य तरुण राठी के बीच हुई बैठक के बाद लिया गया।बैठक में चिकित्सकों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई और उनके समाधान के लिए समय सीमा तय की गई। डॉ राकेश मालवीय महासंघ के संयोजक ने बताया सभी पदाधिकारियों ने एकमत से आंदोलन को स्थगित करने का निर्णय लिया है और आगामी बैठक के निर्णयों का इंतजार कर रहे हैं।

महाकुंभ मेला-2025 : ट्रेने निरस्त

भोपाल (निप्र)। उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मंडल में महाकुंभ मेला-2025 के चलते परिचालनिक कारणों से भोपाल मण्डल से होकर गुजरने वाली निम्नांकित ट्रेने अपने प्रारंभिक स्टेशन से निरस्त रहेंगी।

1. गाड़ी संख्या 01025 (दादर-बलिया) दिनांक 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 2. गाड़ी संख्या 01027 (दादर-गोरखपुर) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 3. गाड़ी संख्या 11055 (लोकमान्य तिलक ट.-गोरखपुर) दिनांक 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 4. गाड़ी संख्या 11059 (लोकमान्य तिलक ट.-छपरा) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 5. गाड़ी संख्या 11081 (लोकमान्य तिलक ट.-गोरखपुर) दिनांक 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 6. गाड़ी संख्या 12141 (लोकमान्य तिलक ट.-पाटलिपुत्र) दिनांक 25 एवं 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 7. गाड़ी संख्या 12142 (पाटलिपुत्र-लोकमान्य तिलक ट.) दिनांक 26 एवं 27 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 8. गाड़ी संख्या 12149 (पुणे-दानापुर) दिनांक 25 एवं 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 9. गाड़ी संख्या 12321

(हावड़ा-छत्रपति शिवाजी महाराज ट.) दिनांक 25 एवं 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 10. गाड़ी संख्या 12941 (भावनगर टर्मिनस-आसनसोल) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 11. गाड़ी संख्या 19045 (सूरत-छपरा) दिनांक 23,24,26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 12. गाड़ी संख्या 19046 (छपरा-सूरत) दिनांक 25,26,28 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 13. गाड़ी संख्या 19483 (अहमदाबाद-बरौनी) दिनांक 22 से 26 फरवरी 2025 तक निरस्त रहेगी। 14. गाड़ी संख्या 19484 (बरौनी-अहमदाबाद) दिनांक 24 से 28 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 15. गाड़ी संख्या 19489 (अहमदाबाद-गोरखपुर) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 16. गाड़ी संख्या 19490 (गोरखपुर-अहमदाबाद) दिनांक 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 17. गाड़ी संख्या 20903 (एकता नगर-वाराणसी) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 18. गाड़ी संख्या 20904 (वाराणसी-एकता नगर) दिनांक 27 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 19. गाड़ी संख्या 20961 (उधना-बनारस) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 20. गाड़ी संख्या 20962 (बनारस-उधना) दिनांक 26 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 21. गाड़ी संख्या 22911 (इंदौर-हावड़ा) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 22. गाड़ी संख्या 22912 (हावड़ा-इंदौर) दिनांक 24,27 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 23. गाड़ी संख्या 22948 (भागलपुर-सूरत) दिनांक 27 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी। 24. गाड़ी संख्या 22947 (सूरत-भागलपुर) दिनांक 25 फरवरी 2025 को निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए रेलवे द्वारा अधिकृत रेलवे पूछताछ सेवा ह्ज्ञश्व्स/139 से गाड़ी की सही स्थिति की जानकारी पता करके तदनुसार यात्रा प्रारम्भ करें।

एकल सदस्यीय प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण का पुनर्गठन

भोपाल,(आरएनएस)। प्रदेश में प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण के कार्यों को लोक सेवा गारंटी अधिनियम के अधीन लाये जाने के लिये अधिसूचित किया गया है। प्राधिकरण के कार्यों को समय-सीमा में पूरा करने और उत्तरदायित्व निर्धारण के लिये एकल सदस्यीय प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण का पुनर्गठन किया गया है।प्रदेश में 10 राजस्व संभागों में पदस्थ आयुक्त राजस्व संभाग को उनके क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले जिलों के लिये कर्त्तव्यों का निर्वहन करने के लिये एकल सदस्यीय प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण का पुनर्गठन किया गया है। पुनर्गठन की अधिसूचना मध्यप्रदेश राजपत्र में सचिव परिवहन मनीष सिंह के हस्ताक्षर से जारी की गई है।

जीआईएस के दौरान वन विहार राष्ट्रीय उद्यान पर्यटकों के लिये बंद रहेगा

भोपाल(आरएनएस)।भोपाल का वन विहार राष्ट्रीय उद्यान 24 एवं 25 फरवरी 2025 को बंद रहेगा। उल्लेखनीय है कि दो दिवसीय ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के आयोजन और व्यवस्थाओं के सुचारू संचालन के मद्देनजर आमजन और पर्यटकों के लिए वन विहार को बंद रखा जा रहा है।

किसान बोले 'पानी हमारा, लूट उनकी!' शिप्रा नदी में सूखे पर जबरदस्त विरोध

इंदौर(ए.)। सूखी पड़ी शिप्रा नदी में पानी छोड़ने को लेकर इंदौर और देवास जिले के सैकड़ों किसान 25 फरवरी को प्रदर्शन करने जा रहे हैं। उनकी मांग है कि हमारे हिस्से का पानी दूसरे जिलों में भेजा जा रहा है जो जो हमें मिलना चाहिए। इसको लेकर कल एक बैठक भी हुई, जिसमें निर्णय लिया कि गांव-गांव से किसानों को लाकर प्रदर्शन किया जाएगा। नदी के एक ओर इंदौर जिले के तो दूसरी ओर देवास जिले के किसान प्रदर्शन करेंगे।

सीएम उज्जैन ले गए देवास का पानी

किसानों ने बताया कि मुख्यमंत्री मोहन यादव इंदौर और देवास जिले के हिस्से का शिप्रा का पानी अपने जिले उज्जैन में ले गए हैं। इससे किसान परेशान हो रहा है और वह फसल नहीं उगा पा रहा है, जबकि नर्मदा क्षिप्रा संगम इसलिए किया गया था कि किसानों के लिए पानी क्षिप्रा नदी में छोड़ा जाएगा और किसानों को फसल उगाने का मौका मिलेगा। किसान नेता हंसराज मंडलोई ने आरोप लगाया कि अब किसानों के साथ विश्वासघात किया जा रहा है। इसी को लेकर 25 फरवरी को शिप्रा नदी के किनारे पर इंदौर एवं देवास जिले की हाटपीपल्या एवं सांवेर विधानसभा क्षेत्र के किसान नर्मदा शिप्रा लिंक को चालू करने के लिए एवं उज्जैनी से उज्जैन तक नर्मदा की जो पाइप लाइन सांवेर विधानसभा क्षेत्र के गांव से गई है, उससे क्षेत्र के किसानों एवं तालाबों को पानी उपलब्ध कराने के लिए धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया है।

शिप्रा नदी के किनारे पर होगा प्रदर्शन

इस कड़ी में इंदौर जिले के सेमलियाचाऊ में शिप्रा नदी के किनारे पर किसान सुबह 10 बजे से 12 बजे तक प्रदर्शन करेंगे एवं इंदौर जिले के इसके बाद में देवास जिले की सीमा में नदी के उसे किनारे पर 12 बजे से लगाकर भरी दोपहर 2 बजे तक ग्राम देखना खेड़ी में देवास जिले के किसान प्रदर्शन करेंगे एवं नर्मदा क्षिप्रा लिंक परियोजना को चालू करने के साथ हाटपीपल्या विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक गांव में नर्मदा का पानी पहुंचाने के संबंध में अपनी बात रखेंगे। किसानों ने सूखी पड़ी नदी में बैठकर शपथ ली है कि जब तक नर्मदा-शिप्रा परियोजना का पानी हमारे जिलों में नहीं आता तब तक आंदोलनों के माध्यम से हम सरकार को जगाने का काम करेंगे।

किसानों का पानी उद्योगों को बेचा

किसान नेताओं ने कहा की मध्य प्रदेश के मुखिया देवास एवं इंदौर जिले के हिस्से का पानी अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए अपने गृह क्षेत्र उज्जैन पाइप लाइन के जरिए ले जा रहे हैं और किसानों के हिस्से का पानी उद्योगों को बेचा जा रहा है। किसान नेताओं ने कहा कि देवास एवं इंदौर जिले के भारतीय जनता पार्टी के सांसद और विधायकों के साथ मंत्री भी कुछ नहीं बोल रहे हैं। किसानों का कहना है कि सांवेर से ही जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट है, बावजूद इसके क्षेत्र के किसान पानी के लिए परेशान हो रहे हैं। 25 फरवरी को होने वाले धरना प्रदर्शन में किसानों ने अपने आसपास के गांवों के किसानों को भी लाने की अपील की है, ताकि उनके हिस्से का पानी शिप्रा नदी में छोड़ा जा सके और वे फसल ले सकें।

पुलिसकर्मी ही कर रहे थे गांजे की तस्करी, 84 किलो गांजे के साथ पकड़े गए

शिवपुरी (ए.)। गुना की डी कंपनी 26 बटालियन में पदस्थ दो एसएएफ पुलिस जवान गांजा तस्करी के आरोप में पकड़े गए हैं। ये अपने साथियों के साथ तस्करी कर रहे थे। शिवपुरी की करैरा पुलिस ने एसएएफ के दो पुलिस जवानों सहित एक अन्य व्यक्ति को गांजा तस्करी के आरोप में पकड़ा है। शिवपुरी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक संजीव मुले ने बताया कि गुना की डी कंपनी 26 बटालियन में पदस्थ दो एसएएफ पुलिस जवान गांजा तस्करी के आरोप में पकड़े गए हैं। यह अपने साथियों के साथ दो कारों से गांजा तस्करी कर रहे थे। पुलिस ने इस मामले में कुल तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जिसमें 84 किलो गांजा जिसकी कीमत 16 लाख 80 हजार रुपए बताई गई है जबकि दो कार की कीमत 18 लाख रुपए जब्त किए गए हैं। सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

शिवपुरी के एडिशनल एसपी संजीव मुले ने बताया कि करैरा पुलिस को सूचना मिली थी कि एक कार में गांजा लेकर दो व्यक्ति बसई से पिछोर होते हुए करैरा में गांजा बेचने के लिए आ रहे हैं। कार के आगे एक अन्य कार भी चल रही थी जिसमें तीन व्यक्ति बैठे थे।

पुलिस ने चैकिंग अभियान चला कर मुखबिर के बताए स्थान पर कार को रोका। तब कार में बैठे व्यक्ति भागे। बाद में इनको पकड़ लिया गया। पुलिस ने एनडीपीसी एक्ट के तहत मामला पंजीकृत किया है। तीनों आरोपियों से पूछताछ की जा रही है इस मामले में दो आरोपी फरार हैं जिनकी तलाश में पुलिस जुट गई है।

विधायक के बेटे की कंपनी पर अवैध उत्खनन का आरोप, तहसीलदार ने जब्त की जेसीबी और डंपर; बेटे ने दी सफाई

दमोह (ए.)। दमोह जिले के जबेरा ब्लॉक के भाट खमरिया गांव में खनन को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। शुक्रवार रात भगवती मानव कल्याण संगठन के सदस्यों ने इसे अवैध बताते हुए काम रुकवा दिया। संगठन की शिकायत पर जबेरा तहसीलदार सोनम पांडे ने मौके पर पहुंचकर दो जेसीबी और तीन डंपर जब्त कर लिए।

संगठन के कार्यकर्ताओं ने दमोह विधायक जयंत मलैया के बेटे सिद्धार्थ मलैया की कंपनी अर्जुन कंस्ट्रक्शन पर अवैध खनन का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि खनन कर रहे कर्मचारियों के पास जरूरी दस्तावेज नहीं थे और उन्होंने मलैया परिवार का नाम लेकर धमकी दी। तहसीलदार सोनम पांडे ने पुष्टि की कि कर्मचारियों के पास कोई वैध दस्तावेज नहीं मिले, जिसके बाद कार्रवाई की गई।

इस पर सिद्धार्थ मलैया ने कहा कि कार्रवाई गलत तरीके से की गई है। उन्होंने बताया कि पंचायत की अनुमति से तालाब के गहरीकरण और चौड़ीकरण के दौरान निकाली गई मुरम का उपयोग दमोह-जबलपुर स्टेट हाईवे की मरम्मत में किया जा रहा है। उन्होंने दावा किया कि इस कार्य के लिए माइनिंग विभाग की अनुमति की जरूरत नहीं होती और रॉयल्टी भी नहीं देनी पड़ती।

पाली के करकटी में मिला बाघ का शव, मौत के कारणों की जांच जारी...वन विभाग की टीम ने की घेराबंदी

उमरिया (ए.)। उमरिया जिले के सामान्य वन मंडल के पाली परिक्षेत्र के करकटी इलाके में शनिवार को एक बाघ का शव संदिग्ध परिस्थितियों में पाया गया। यह शव बेली सर्किल के करकटी बीट के राजस्व क्षेत्र में मिला। सूचना मिलते ही वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचे और क्षेत्र की घेराबंदी कर दी।

मृत बाघ के पास एक अन्य बाघ के पगमार्क भी देखे गए, जिससे आशंका जताई जा रही है कि दोनों के बीच संघर्ष हुआ होगा। हालांकि, बाघ की मौत का वास्तविक कारण पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा।

वन विभाग ने तत्काल डॉक्टरों की एक टीम को बुलाया, जो बाघ के शव का पोस्टमॉर्टम कर रही है। इसके साथ ही, फॉरेंसिक जांच भी कराई जा रही है ताकि शिकार या जहर दिए जाने की संभावना को खारिज किया जा सके। वन अधिकारियों के अनुसार, घटना के सभी पहलुओं की गहराई से जांच की जा रही है।

बाघों की रहस्यमयी मौतें वन्यजीव संरक्षण के लिए गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं। उमरिया जिला, जो बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के नजदीक स्थित है, बाघों की आबादी के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र माना जाता है। ऐसे में इस घटना ने वन विभाग को सतर्क कर दिया है।

वन विभाग ने स्थानीय लोगों से अपील की है कि यदि उन्हें आसपास के क्षेत्रों में कोई संदिग्ध गतिविधि दिखाई दे तो तुरंत अधिकारियों को सूचित करें। फिलहाल, वन विभाग और डॉक्टरों की टीम मिलकर बाघ की मौत की गुत्थी सुलझाने में जुटी है।

घर पर अकेला पाकर पड़ोसी ने किया मासूम से दुष्कर्म का प्रयास, पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा

नरसिंहपुर (ए.)। नरसिंहपुर जिले के पलोहा में दिल दहला देनी वाली घटना सामने आई है। यहां घर में घुसकर नाबालिग से दुष्कर्म के प्रयास का मामला सामने आया है। घटना को पड़ोस के रहने वाले युवक ने अंजाम दिया। घटना की जानकारी जब बच्ची की मां को हुई तो वो थाने पहुंची। मां की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

कैंसर हॉस्पिटल के भूमि पूजन में शामिल हो सकता है अंबानी परिवार, आज पीएम मोदी करेंगे शिलान्यास

छतरपुर (ए.)। छतरपुर जिले के प्रसिद्ध तीर्थस्थल बागेश्वर धाम में 200 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले कैंसर अस्पताल का भूमिपूजन 23 फरवरी को किया जाएगा। इस ऐतिहासिक अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ देश के शीर्ष उद्योगपति अंबानी परिवार की उपस्थिति की भी संभावना जताई जा रही है।

सूत्रों की मानें तो हाल ही में अंबानी परिवार के एक शादी समारोह में बाबा बागेश्वर (धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री) को आमंत्रित किया गया था, जिसमें वे शामिल भी हुए थे। इसी संबंध को देखते हुए कयास लगाए जा रहे हैं कि अंबानी परिवार इस वृहद कार्यक्रम में भाग लेकर अपने सहयोग का संकेत दे सकता है।

बागेश्वर धाम में कैंसर अस्पताल के निर्माण से न केवल छतरपुर जिले बल्कि पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र को अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का लाभ मिलेगा। यह अस्पताल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के इलाज के लिए आधुनिक तकनीकों से लैस होगा और दूर-दराज के मरीजों के लिए एक वरदान साबित हो सकता है।

व्यापार समाचार

लगातार तीसरे सप्ताह भी शेयर बाजार में गिरावट रही

- **सेंसेक्स 424.90 अंक गिरकर 75,310 पर बंद**
- **निफ्टी 117.25 अंक गिरकर 22,790 पर बंद**

मुंबई (ए.)। लगातार तीसरे सप्ताह भी शेयर बाजार में गिरावट का दोर जारी रहा। बाजार के जानकारों ने कहा कि बाजार में गिरावट हैवीवेट वित्तीय और ऑटोमोबाइल शेयरों में कमजोरी के कारण रही। वहीं अमेरिकी टैरिफ से जुड़ी चिंताओं के कारण निवेशकों की धारणा कमजोर बनी हुई है। जानकारों के अनुसार एफआईआई की लगातार बिकवाली, रुपये में गिरावट, महंगे मूल्यांकन और अमेरिका की ओर से टैरिफ लगाने की धमकी जैसे नकारात्मक कारणों से निवेशक भारतीय शेयरों से दूर हो रहे हैं। शेयर बाजार के बीते सप्ताह के पांच कारोबारी दिनों पर नजर डालें तो हफ्ते के पहले कारोबारी दिन घरेलू शेयर बाजार में बड़ी गिरावट देखी गई। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी धड़ाम हो गए। सेंसेक्स 297.8 अंक गिरकर 75,641.41 अंक पर आ गया, जबकि निफ्टी 119.35 अंक गिरकर 22,809.90 अंक पर खुला और 57.65 अंक चढ़कर 75,996.86 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 119.35 अंक गिरकर 22,809.90 अंक पर खुला और 30.25 अंक बढ़कर 22,959.50 पर बंद हुआ। मंगलवार को शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 201.44 अंक गिरकर 75,795.42 अंक पर खुला और 29.47 अंक गिरकर 75,967.39 अंक पर बंद हुआ।

GDP: 'भारत की वृद्धि दर में वित्त वर्ष 2025 की तीसरी तिमाही में हो सकता है सुधार', यूबीआई ने किया यह दावा

नई दिल्ली (ए.)। वित्त वर्ष 2024-25 की तीसरी तिमाही में भारत की आर्थिक वृद्धि में तेजी आने की उम्मीद है, जिसमें जीडीपी वृद्धि 6.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। दूसरी तिमाही में यह आकंड़ा 5.4 प्रतिशत था। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी एक रिपोर्ट में यह बात कही है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि जीडीपी और सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) वृद्धि के बीच जो नकारात्मक अंतर, वित्त वर्ष 25 की पहली छमाही में देखा गया, उसमें तीसरी तिमाही में सुधार हो सकता है। रिपोर्ट में कहा गया है, "हमारा अनुमान है कि चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर बढ़कर 6.2 प्रतिशत (जो दूसरी तिमाही में 5.4 प्रतिशत थी) हो जाएगी, क्योंकि Hv-FY25 में जीडीपी और जीवीए वृद्धि के बीच देखा गया नकारात्मक अंतर संभवत: QxFY25 में बेअसर हो गया।"

हालांकि, रिपोर्ट ने जीडीपी डेटा और राजकोषीय डेटा में दर्शाए गए शुद्ध अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि के रुझानों के बीच एक विसंगति की ओर भी इशारा किया। इसने चेतावनी दी कि इस तिमाही में राजकोषीय आंकड़ों में शुद्ध अप्रत्यक्ष कर वृद्धि में गिरावट से QxFY25 में भी नकारात्मक जीडीपी-जीवीए वृद्धि अंतर जारी रहने का जोखिम हो सकता है। रिपोर्ट ने पूरे साल के लिए जीडीपी विकास पूर्वानुमान को 6.4 प्रतिशत पर अपरिवर्तित रखा है, जिसके लिए वित्त वर्ष की दूसरी छमाही (।।2) में लगभग 6.8 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि की आवश्यकता होगी, जबकि पहली छमाही में यह 6 प्रतिशत थी।

अदाणी ग्रीन एनर्जी की राजस्थान में 250 मेगावाट की सौर परियोजना शुरु

नई दिल्ली (ए.)। अदाणी ग्रीन एनर्जी लिमिटेड (एजीईएल) की इकाई ने राजस्थान के जैसलमेर में सौर परियोजना का परिचालन शुरू कर दिया है। एजीईएल ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि इस संयंत्र के चालू होने के साथ ही इसकी नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन क्षमता बढ़कर 11,916.1 मेगावाट हो गई है। एजीईएल की अनुषंगी की अनुषंगी अदाणी ग्रीन एनर्जी ट्वेंटी फोर लिमिटेड (एजीई24एल) ने जैसलमेर के भीमसर और द्वाडा में 250 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना का संचालन शुरू कर दिया है।

पायलटों के विश्राम करने का समय बढ़ेगा, न्यायालय का समर्थन

- 1 जुलाई से ड्यूटी मानदंड में होगा संशोधन

नई दिल्ली (ए.)। दिल्ली उच्च न्यायालय में पेश किए गए एक हलफनामे में कहा गया है कि पायलटों के साप्ताहिक विश्राम करने के समय को मौजूदा 36 घंटों से बढ़ाकर 48 घंटे करने पर विचार किया गया है। डीजीसीए ने दिल्ली उच्च न्यायालय को सूचित किया है कि एयरलाइंस 1 जुलाई से चरणबद्ध तरीके से पायलटों के लिए ड्यूटी और विश्राम घंटों पर संशोधित मानदंडों को लागू करेंगी। नागरिक विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने न्यायमूर्ति को यह भी सूचित किया कि शेष संशोधित नियम 1 नवंबर से लागू किए जाएंगे। वहीं अन्य पहलुओं के अलावा, एयरलाइंस यह सुनिश्चित करेंगी कि संशोधित मानदंडों के तहत एक साप्ताहिक आराम अवधि के अंत और अगले की शुरुआत के बीच 168 घंटे से अधिक का समय न हो।

पेट्रोल और डीजल के भाव में जनता को कटौती की उम्मीद!

नई दिल्ली (ए.)। महंगाई के बोझ तले दब रही जनता को सरकार से राहत की उम्मीद है। दैनिक उपभोग से लेकर जरूरी सामानों के दाम में आए दिन बदलाव देखने को मिल रहा है। वहीं बात करें पेट्रोल-डीजल के दाम की तो जनता ईंधन के दाम में भी कटौती की उम्मीद लगाए बैठी है। इस बीच सरकारी तेल कंपनियों ने 22 फरवरी का नया भाव जारी कर दिया है। सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार शनिवार को पेट्रोल और डीजल के भाव में कोई बदलाव नहीं किया गया है। दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपए है और डीजल प्रति लीटर 87.62 रुपए है। इसके अलावा मुंबई में प्रति लीटर की कीमत 103.94 रुपए और डीजल प्रति लीटर के दाम 89.97 रुपए है। वहीं कोलकाता में प्रति लीटर पेट्रोल का भाव 103.94 रुपए और डीजल का भाव 90.76 रुपए है। आखिर में चेन्नई में प्रति लीटर पेट्रोल का दाम 100.85 रुपए प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.44 रुपए प्रति लीटर है।

'बाजार में अधिक तेल होने से ईंधन की कीमतों में कमी संभव', बोले : पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी

नई दिल्ली (ए.)। केंद्रीय पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी के अनुसार अमेरिका सहित वैश्विक बाजार में तेल की अधिक आवक के कारण ईंधन की कीमतों में कमी आ सकती है, उनका मानना है कि ऐसा होने से महंगाई पर काबू पाने में मदद मिलेगी।

केंद्रीय मंत्री ने पत्रकारों से बातचीत में विश्वास जताया है कि भारत ने अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व वाले नए प्रशासन के साथ संपर्क स्थापित कर लिया है। उन्होंने कहा कि ऊर्जा के मोर्चे पर भारत-अमेरिका संबंध और मजबूत होंगे। पुरी के अनुसार, भारत अर्जेंटीना सहित 40 देशों से तेल खरीदरता है।

उन्होंने कहा कि दुनिया में पर्याप्त तेल है, इसलिए तेल उत्पादक देश जो कटौती कर रहे हैं, उन्हें भी अपने फैसले पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

केंद्रीय मंत्री ने कहा है कि तेल खरीद में डॉलर के इस्तेमाल को खत्म करने का इरादा कभी नहीं था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि 'अधिकांश लेनदेन डॉलर में होते हैं और हमेशा से होते आए हैं।' पेट्रोलियम मंत्री ने कहा, "अमेरिका में, उन्होंने (ट्रंप ने) कहा, "ड्रिल, बेबी, ड्रिल।" जो अधिक ड्रिलिंग करने और अधिक तेल निकालने का संकेत है। उन्होंने आधिकारिक रूप से कहा है कि वह अंतरराष्ट्रीय तेल की कीमतों को कम करना चाहते हैं।"

पुरी ने कहा, "मुझे लगता है कि आने वाले समय में वैश्विक ऊर्जा की स्थिति में सुधार होगा। बाजार में अधिक ऊर्जा आएगी और उम्मीद है कि इससे कीमतों में कमी लाने में मदद मिलेगी। जब ऊर्जा कम कीमतों पर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती है, तो इससे महंगाई को नियंत्रित करने में भी मदद मिलती है।" उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत का प्राथमिक उद्देश्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए 'कम कीमतों पर' पर्याप्त तेल खरीदना है।

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड पर आरबीआई ने दिया बड़ा अपडेट, निवेशकों को कब मिलेगा भुनाने का मौका

नई दिल्ली (ए.)। अगर आपने भी सरकार की ओर से जारी सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड में निवेश कर रखा है, तो यह खबर आपके लिए यह बहुत काम की है। आरबीआई ने सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (एसजीबी) से जुड़ी उन तिथियों का ब्यौरा दिया गया है, जिन्हें अप्रैल से सितंबर 2025 के बीच समय से पहले भुनाया जाना है। केंद्रीय बैंक ने 21 फरवरी, 2025 को एक बयान जारी कर इसकी जानकारी दी। रिजर्व बैंक ने बताया है कि यदि निवेशक समय से पहले भुनाकर एसजीबी को भुनाना चाहते हैं, तो उन्हें किस समय अवधि में आवेदन करना होगा।

आरबीआई ने अपने बयान में क्या कहा है, आइए जानें

आरबीआई के अनुसार 22 अक्टूबर, 2021 के परिपत्र IDMD.CDD.1100/14.04.050/2021-22 के तहत जारी सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड (SGB) योजना पर समेकित प्रक्रियात्मक दिशानिर्देशों के पैरा 13 के अनुसार, ऐसे बॉन्ड जारी होने की तारीख से पांच साल के बाद सोने के बांड को समय से पहले भुनाने की अनुमति दी गई है। केंद्रीय बैंक ने 01 अप्रैल, 2025 से 30 सितंबर, 2025 की अवधि के दौरान सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड भुनाने की तिथि का विवरण जारी किया है।

ईएसआईसी में 17 लाख से अधिक नए कर्मचारियों ने दिसंबर में कराया पंजीकरण

नई दिल्ली (ए.)। एंप्लॉई स्टेट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (ईएसआईसी) से दिसंबर में 17.01 लाख नए कर्मचारी जुड़े हैं। इसके साथ ही 20,360 नई संस्थाओं ने पंजीकरण कराया है। यह जानकारी शुक्रवार को सरकार द्वारा दी गई। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने कहा कि दिसंबर के दौरान जोड़े गए कुल 17.01 लाख कर्मचारियों में से 8.22 लाख कर्मचारी, जो कुल पंजीकरण का लगभग 48.35 प्रतिशत है, 25 वर्ष तक की आयु वर्ग के हैं।

यह आंकड़ा दिखाता है कि देश में बड़ी संख्या में नए रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं।पेरोल डेटा का लिंग-आधार पर विश्लेषण दिखाता है कि दिसंबर में ईएसआईसी स्कीम में 3.46 लाख महिला कर्मचारियों का पंजीकरण हुआ है।इसके अलावा 73 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों भी इस स्कीम से जुड़े हैं।इस हफ्ते की शुरुआत में सांख्यिकी मंत्रालय द्वारा श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) का डेटा जारी किया गया था। इसमें बताया गया था कि शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष और उससे अधिक के आयु वर्ग के लोगों में एलएफपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 50.4 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान अवधि में 49.9 प्रतिशत पर था।

शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के पुरुषों के लिए एलएफपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 75.4 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान तिमाही में 74.1 प्रतिशत था। शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के महिलाओं के लिए एलएफपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 25.2 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान तिमाही में 25 प्रतिशत था।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है,
सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

ओहदे ऊपर-नीचे होने से दोयम बर्ताव करने का हक किसी को नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने कार्यस्थल पर वरिष्ठों के बर्ताव को लेकर बड़ा फैसला दिया है। कहा कि वरिष्ठ अधिकारियों की डांट-फटकार को इरादतन किया गया अपमान नहीं माना जा सकता, जिस पर आपराधिक कार्यवाही की जरूरत हो।

ऐसे मामलों में व्यक्तियों के विरुद्ध आपराधिक आरोप लगाने की अनुमति देने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। पीठ ने कहा महज गाली-गलौच, असभ्यता व अशिष्टता भारतीय दंड संहिता की धारा 504 के तहत आदतन किया गया अपमान नहीं है। यह धारा शांति भंग करने के इरादे से जान-बूझकर अपमान करने से संबंधित है, जिसमें दो साल की सजा का प्रावधान है।

मामले में राष्ट्रीय दिव्यांग सशक्तिकरण संस्थान के कार्यवाहक निदेशक पर सहायक प्रोफसर को अपमानित करने का आरोप था। शिकायतकर्ता के अनुसार निदेशक ने अन्य कर्मचारियों के समक्ष डांटा व फटकारा था। यह सच है कि कार्यस्थल से संबंधित अनुशासन और कर्तव्यों के निर्वहन से जुड़ी फटकार, जो व्यक्ति कार्यस्थल पर प्रबंधन करता है, वह अधीनस्थों से अपनी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा व समर्पण से पूरी करने की उम्मीद करेगा।हालांकि स्पष्ट तौर पर देखने में आता है कि अनुशासन के नाम पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा अपने अधीनस्थों के साथ संतुलित बर्ताव का अभाव नजर आता है। लहजा गलत हो भी तो नीयत बुरी नहीं होनी चाहिए, परंतु इस बारीक अंतर को समझना या समझा पाना भी आसान नहीं है। सेना के सख्त अनुशासन के दरम्यान कई बार ऐसी खबरें आती रहती हैं, जहां नीचे के ओहदे के सैनिक द्वारा अपने अधिकारी की हत्या तक कर दी गई। तय रूप से काम का दबाव, उच्च दर्जे की तामील, पाबंदियां और तय वक्त पर जिम्मेदारियों का निर्वहन अधिकारियों के जेहन पर खासा दबाव बनाते हैं। वे भी तनावग्रस्त या काम के बोझ के चलते सामान्य बर्ताव करने से चूक सकते हैं। यहां बात सिर्फ उच्चाधिकारियों या कनिष्ठों तक ही सीमित नहीं है।कार्य-स्थल पर अभद्र भाषा या गाली-गलौच करने वाले अशिष्ट अधिकारियों के बर्ताव को लेकर भी कर्मचारी क्षुब्ध रहते हैं। ज्यों कार्यस्थल पर महिलाओं के खिलाफ होने वाले उत्पीडन् व अभद्र बर्ताव को लेकर कानून बनाए गए हैं। वैसे ही समस्त कर्मचारियों के हित में भी व्यवहारगत संहिता लागू किए जाने की जरूरत है। मानवता कहती है, ओहदे ऊपर-नीचे होने से दोयम बर्ताव करने का हक किसी को नहीं दिया जा सकता। यह नियम मालिकान व मुलाजिम पर भी लागू होता है।

यह कैसा समाज गढ़ रहे हैं सोशल मीडिया के रणवीर ?

अजय बोकिल

जाने-माने यू ट्यूबर और सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर रणवीर इलाहाबादिया तथा एक और इंफ्लूएएंसर समय रैना को उनके विवादित शो 'इंडिया गॉट लेटेंट' में अश्लील टिप्पणी के लिए व्यापक आलोचना और कानूनी कार्रवाई का सामना करना पड़ रहा है। शो में अश्लील और अभद्र भाषा व भाव के चलते मचे देशव्यापी बवाल के बाद रणवीर ने अपने किए पर माफी मांग ली है, लेकिन उसमें भी पश्चाताप के भाव से ज्यादा सोशल मीडिया पर फॉलोअर घटने का भय ज्यादा है। रणवीर का यह एपीसोड भारत सरकार द्वारा यू ट्यूब को की गई शिकायत के बाद हटा लिया गया है, लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं होता बल्कि शुरू होता है। चाहे रणवीर अहलाबादिया हो, समय रैना हो या फिर उनकी सहयोगी अपूर्वा माखीजा हो, ये सभी उस आयु वर्ग के हैं, जो अंगरेजी में 'जनरेशन जेड' कहलाती है। यह पीढ़ी इंटरनेट के साथ जन्मी और सोशल मीडिया के साथ जवान हुई। इस पीढ़ी के सामाजिक और नैतिक मूल्य तथा सामाजिक संस्कार वो नहीं हैं, जिसे बीसवीं सदी के आखिरी चौथाई की शुरूआत तक जन्मी पीढ़ी स्वीकार करती आई है। रणवीर का एक विवादित एपीसोड भले ही यू ट्यूब से हटा लिया गया हो, लेकिन ऐसे और कई शो और चैनल धड़ल्ले से प्रसारित किए और लाखों की संख्या में देखे जा रहे हैं, जो परंपरावादी भारतीयों को शर्मसार करने और आत्मग्लानि का कारण हो सकते हैं। मां बाप के अंतरंग सम्बन्धों को लेकर शो में रणवीर ने जो अश्लील टिप्पणी जिस सहजता और मजाकिया अंदाज में की और जिसे सुनकर वहां बैठे युवा जज जिस तरह खी खी कर हंसते रहे, वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि भारत की युवा पीढ़ी के लिए सामाजिक मर्यादा, शालीनता और संस्कारों का अर्थ क्या है? शील और अश्लील की उनकी परिभाषा क्या है? खुलेपन और नंगई के बीच सूक्ष्म भेद के मानी क्या हैं? वो आने वाले दशको के लिए कैसा समाज गढ़ रहे हैं? जिनके लिए शिष्टता, सार्वजनिक मर्यादा और भाषा की लक्ष्मण रेखा का कोई अर्थ नहीं है बशर्ते की वह मनोरंजन करे। उससे व्यूज और लाइक्स मिलें। इंफ्लूएंसर्स की जेब भरे। आज चालीस से ऊपर आयु वालों के लिए यह वाकई 'न्यू नॉर्मल' हैं, जो भारतीय संस्कृति में माता-पिता देवो भव का पाठ पढ़ते और इस संस्कार को निभाते आए हैं। इसमे अति आदर्शवाद हो सकता है, लेकिन वो हमारे जीवन मूल्यों का सार भी है।

आज सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर अपवादस्वरूप कुछ काम की सामग्री छोड़ दें तो ऐसे कंटेंट की भरमार है, जो कब आदमी को शैतान बना दे, कब उसे उसके पारंपरिक मूल्यों से डिगा दे, कब सामाजिक शिष्टाचार को धता बता कर मनमर्जी से एंज्वॉय करने दे, कहा नहीं जा सकता। आज के युवा आपस में जिस भाषा, संकेतों और मुद्राओं में बात करते हैं, वह हमारी पारंपरिक मान्यताओंसे काफी अलग और हैरान करने वाला है। इसका अर्थ यह नहीं कि भाषा के स्तर पर अवभाषा या बाजारू

तथा अश्लील शब्दों से भरी अभिव्यक्ति कोई नई चीज है। लेकिन समाज ने अपने विवेक से शिष्टता और शालीनता की भी एक सफेद लक्ष्मण रेखा खींची हुई है, जो देश काल की सीमाओं से परे समूचे मानव समाज में मान्य रही है। इसीलिए गालियां भाषा का सहज हिस्सा होते हुए भी संस्कारित संभाषण का भाग कभी नहीं होतीं। कोई ऐसा करता भी है तो उसे सम्मान के भाव नहीं देखा जाता। लेकिन अब जिस तरह कॉमेडी शो व्यूअर्स बटोरने के लिए सोशल मीडिया पर अपलोड हो रहे हैं, वो गालियों को ही सभ्य समाज की मान्य और व्यवहार भाषा में बदलने का अट्टहास लिए हुए हैं। ज्यादातर युवा इसमें कुछ भी गैर नहीं देखते। यह अपने आप में खतरनाक सिग्नल है।

अगर 'इंडिया गॉट लेटेंट' शो की ही बात करें तो इसका नाम ही बहुत चालाक अश्लीलता से भरा है। हिंदी में जाहिरा तौर पर इसका अर्थ 'भारत को मिला अव्यक्त' होगा, लेकिन यहां अव्यक्त से तात्पर्य केवल भाव से नहीं बल्कि उस 'गुप्त' से है, जिसका इशारा उन मानव अंगो से है, जिनका सार्वजनिक उच्चारण और उनसे जुड़ी गालियों का प्रयोग भी बेहद निजी संवाद या समवयस्क मित्र मंडली के बीच ही किया जाता है। जब शो का अव्यक्त भाव ही अश्लील है तो उसमें शील और शालीन की अपेक्षा करना बेमानी है। लेकिन आश्चर्य कि सोशल मीडिया पर ऐसे शो देखने और उसे भरपूर एंज्वॉय करने वालों की तादाद लाखों में है। इसमें ज्यादा युवा पीढ़ी के वो लोग हैं, जिन पर भावी भारत का समाज गढ़ने की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी है। यह हकीकत है कि स्त्री-पुरूष के संसर्ग से ही संतान का जन्म होता है। लेकिन यह एक भौतिक सचाई है। सामाजिक मर्यादा में वो स्त्री-पुरूष मां-बाप होते हैं, जो प्रजनन के नैसर्गिक दायित्व के साथ साथ सामाजिक और नैतिक दायित्वों को भी निष्ठा के साथ निभाते हैं। मानव सभ्यता और संस्कृति का अवदान अगली पीढ़ी को सौंपते हैं। परिवार संस्था को जिंदा रखते हैं। मां-बाप का यह शारीरिक सम्बन्ध केवल किसी जोक के लिए अथवा अपने इस अंतरंग रिश्ते को संतान के समक्ष अनावृत्त करने के लिए नहीं होता। वास्तव में यह ऐसा नैसर्गिक सत्य है, जो माता-पिता के रूप में मनुष्य के जन्मदाता के पवित्र आवरण में छिपा रहता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में माता-पिता को ईश्वर के समकक्ष माना गया है। रणवीर की मां-बाप के अंतरंग रिश्तों पर की गई अत्यंत अभद्र और आपबराधिक टिप्पणी पर उनके माता-पिता की प्रतिक्रिया अभी सामने नहीं आई है, लेकिन तय है कि कम से कम एक बार उन्होंने अपने बेटे में डाले संस्कारों पर पुनर्विचार तो किया ही होगा या कि उन्हें करना चाहिए।

इसे दुर्भाग्य कहें या नियति का चक्र कि आज समाज उस दिशा में जा रहा है, जहां पारंपरिक मूल्यों की परिभाषा बदली जा रही है। इसका अर्थ यह नहीं कि सामाजिक मूल्य सदा एक से रहते हैं या रहने ही चाहिए, लेकिन शील-अश्लील, शिष्टता-अशिष्टता, हास्य और अभद्रता, नग्नता और आंख के पर्दे का झीना अंतर भी मनमर्जी से जीने के दुराग्रह से खत्म करने का सुनियोजित वैश्विक षड्यंत्र किया जा रहा है। सोशल मीडिया उसीका कारगर हथियार है। कुछ भाषा विज्ञानियों का मानना है कि गालियां अथवा बाजारू भाषा मानवीय अभिव्यक्ति का सहज रूप है। बावजूद इसके उसे उस सभ्य समाज का हिस्सा कैसे बनाया जा सकता है, जिसने खुद सभ्यता और शालीनता के कुछ पैमाने तय किए हैं? और यही गालियोंयुक्त भाषा, तेवर और देहबोली अगर सभ्यता का परिचायक बन गई तो सभ्य समाज की परिभाषा क्या होगी? क्या आने वाला वक्त केवल उपभोक्ताओंऔर वर्जनाओं को भंग करने में आनंद मानने वाले लोगों का होगा? जिनके लिए जितनी ज्यादा गालियां, उतने ज्यादा व्यूज और लाइक्स ही जीवन का अंतिम सत्य है और होगा। उनकी चिंता यह नहीं है कि वो किस तरह के अराजक और वर्जनाविहीन उन्मुक्त समाज को बढ़ावा दे रहे हैं, बल्कि यह है कि वो ऐसा कुछ भी दिखाने से बचें जिससे उनकी कमाई घटे। कुछ समय पहले देश के कॉमेडियन अपनी विवादित राजनीतिक टिप्पणियों के कारण परंपरावादियों के निशाने पर थे, लेकिन अब बात उससे कहीं आगे बढ़ चुकी है। सामाजिक बुराइयां टूटें यह तो समझ आता है, क्योंकि उसके पीछे एक निश्चित तर्क और विवेक का आग्रह होता है, लेकिन जननांगों पर बेहूदा सार्वजनिक जोक, सॉफ्ट पोर्न पर अभिजात्य चर्चा (जैसे कि गहना वशिष्ठ के ' गहना शो' में होता है) या फिर चाइल्ड पोर्न को वर्जनाओ को तोड़ना और समाज को ऐसे खुले आसमान में बदलने की जिद पूरे समाज को रसातल में ही ले जाएगी, ले जा रही है। सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ने का अर्थ संस्कारों से मुक्ति पाना नहीं है। चिंता की बात यह है कि आने वाली युवा पीढ़ी रसातल के रास्ते को ही उन्मुक्त आंनद के स्वर्ग में जाने की सीढ़ी मानकर मदहोश है। इसका क्या इलाज है, जरा सोचिए।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने देहरादून में सरकारी आवास पर उत्तराखंड विधानसभा अध्यक्ष ऋतु खंडूरी से मुलाकात की।

झूठी शादी की शपथ की आड़ में दुष्कर्म

प्रियंका सौरभ

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की नई रिपोर्ट में कहा गया है कि हर साल झूठी शादी की शपथ की आड़ में कई हजार बलात्कार के मामले दर्ज किए जाते हैं।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा अतुल गौतम मामले में 2025 में दिए गए फैसले से यह सवाल उठता है कि न्यायिक व्याख्याएं महिलाओं की स्वायत्तता और कानूनी सुरक्षा को कैसे प्रभावित करती हैं? बलात्कार और सेक्स के लिए सहमति देना स्पष्ट रूप से अलग-अलग है। इन स्थितियों में, न्यायालय को सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि क्या शिकायतकर्ता की पीड़िता से शादी करने की वास्तविक इच्छा थी या उसके कोई छिपे हुए उद्देश्य थे और उसने केवल अपनी वासना को शांत करने के लिए इस आशय का झूठा वादा किया था, क्योंकि बाद वाले को धोखा या छल माना जाता है। इसके अतिरिक्त, झूठा वादा न निभाने और उसे तोड़ देने में अंतर है। अभियुक्त द्वारा अभियोक्ता को यौन गतिविधि में शामिल होने के लिए लुभाने के इरादे के बिना किया गया वादा बलात्कार के रूप में मान्य नहीं होगा। अभियोक्ता अभियुक्त द्वारा बनाए गए झूठे प्रभाव के बजाय उसके प्रति अपने प्यार और जुनून के आधार पर अभियुक्त के साथ यौन संबंधों के लिए सहमति दे सकती है। वैकल्पिक रूप से, अप्रत्याशित या अनियंत्रित परिस्थितियों के कारण ऐसा करने का इरादा होने के बावजूद अभियुक्त उससे शादी करने में असमर्थ हो सकता है। इन स्थितियों को अलग तरीके से संभालने की जरूरत है। बलात्कार का मामला तभी स्पष्ट होता है जब शिकायतकर्ता का कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा या गुप्त उद्देश्य हो। अतुल गौतम बनाम इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन करता है। यह फैसला अपर्णा भट बनाम के विपरीत है।

2021 के मध्य प्रदेश राज्य के फैसले में आरोपी और पीड़ित को द्वितीयक आघात से बचने के लिए जमानत पर रहते हुए संवाद करने से मना किया गया है। सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि निष्पक्ष सुनवाई की गारंटी के लिए, जमानत की आवश्यकताओं को आरोपी और उत्तरजीवी के बीच संचार के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए। यह विचार कि विवाह बलात्कार के लिए एक उपाय है न कि अपराध के लिए सजा, ऐसी जमानत आवश्यकताओं द्वारा पुष्ट होता है, जो सामाजिक समझौते को कानून के शासन से आगे रखता है। रामा शंकर बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2022) में जमानत देते समय इसी तरह के शब्दों का इस्तेमाल किया गया था, जिसने प्रतिवादी के खिलाफ अभियोजन पक्ष के मामले को कमजोर कर दिया। उत्तरजीवी को जमानत प्राप्त करने के लिए आरोपी द्वारा विवाह के लिए मजबूर किया जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप कानूनी व्यवस्था के भीतर निरंतर दुर्व्यवहार हो सकता है। अभिषेक बनाम उत्तर प्रदेश राज्य (2024) ने न्याय की गारंटी देने के बजाय, अभियुक्त को विवाह के वादे के बदले में जमानत देकर एक दबावपूर्ण गतिशीलता बनाई। जो उत्तरजीवी को उचित पुनर्वास सहायता प्राप्त करने के बजाय अभियुक्त पर निर्भर रहने के लिए मजबूर करता है। किशोरों के निजता के अधिकार (2024) में न्यायालय द्वारा उत्तरजीवियों और बच्चों को आवास, शिक्षा और परामर्श प्रदान करने के राज्य के दायित्व पर प्रकाश डाला गया था। जमानत का उद्देश्य सामाजिक कर्तव्यों को लागू करना नहीं है, बल्कि मामला लंबित रहने तक अस्थायी स्वतंत्रता की गारंटी देना है।

मेष राशि: आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। किसी बात को लेकर भाई-बहन से विचार-विमर्श करेंगे। आज किसी से भी बेवजह उलझनों से आपको बचना चाहिए। इस राशि के जो लोग टेक्सटाइल का काम कर रहे है, उन्हें आज अचानक बड़ा फायदा हो सकता है। आर्थिक पक्ष पहले से मजबूत बना रहेगा। स्वास्थ्य फिट रखने के लिए डेली रुटीन में मेडिटेशन व योगा अपनाएं।

वृष राशि: आज आपका दिन खुशनुमा पल लेकर आया है। कई दिनों से रुका हुआ काम आज पूरा हो जाएगा। माता के साथ धार्मिक कार्यों में मन लगाने से शांति मिलेगी। शाम का समय परिवार वालों के साथ अच्छा बीतेगा। दांपत्य जीवन में आपसी ताल-मेल बना रहेगा। अपनी गलतियों से सीखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा आपको मिलेगी।

मिथुन राशि: आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। घरवालों के साथ कहीं बाहर घूमने जाना आपके लिए अच्छा रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामले में आपको किसी अनुभवी व्यक्ति से ही सलाह लेनी चाहिए। छात्रों के लिए आज का दिन ठीक रहेगा। आपको अपनी मेहनत का फल जरूर मिलेगा। इस राशि की महिलाएं जो घर पर ही कोई बिजनेस करने की सोच रही है उनके लिए आज का दिन अच्छा है।

कर्क राशि: आज का दिन आपके लिए नई खुशियां लाया है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए दिन अच्छा है समाज हित में किए गये कामों की तारीफ होगी। आज आपको उच्चाधिकारी के सामने बात रखने पर पॉजीटिव रिस्पॉन्स मिलेगा। महिलाएं अपने जीवनसाथी को आज कुछ मीठा बना कर खिला सकती है दोनों के बीच रिश्तों में मधुरता बढ़ेगी।

सिंह राशि: आज आपका दिन ठीक रहेगा। किसी भी काम को करते समय अपना मन शांत रखना चाहिए, इससे आपका काम आसानी से पूरा होगा। पैसों से जुड़े बड़े फैसले आपको सोच-समझकर ही लेने चाहिए। किसी पुरानी बात को लेकर आप उलझन की स्थिति में आ सकते हैं। जीवनसाथी के साथ रिश्ते को बेहतर बनाने के लिए, उन्हें कुछ उपहार देंगे। किसी दोस्त से कार्यों को पूरा करने में सहयोग मिलेगा।

कन्या राशि: आज आपका दिन उत्तम रहेगा। इस राशि के स्टूडेंट्स के लिए आज का दिन सफलता दिलाने वाला रहेगा। प्रतियोगी परीक्षा से संबंधित शुभ समाचार मिलेगा। आर्थिक क्षेत्र में स्थिरता बनी रहेगी। आप दोस्तों के साथ कुछ खुशी के पल बिताएंगे। जो लोग मीडिया से जुड़े हुए हैं, उनके कामों की आज प्रशंसा होगी। आज आपको किसी खास व्यक्ति का सहयोग मिलेगा।

तुला राशि: आज आपका दिन बेहतरीन रहेगा। आज बिजनेस में आपको उम्मीद से अधिक फायदा होगा। घर के किसी काम को पूरा करने में बड़े-बुजुर्ग की राय आपके लिए कारगर साबित होगी। इस राशि के लवमेट के लिए आज का दिन बढ़िया है। थोड़ी मेहनत से किसी बड़े धन लाभ का अवसर प्राप्त होगा। अनजान व्यक्ति आपका फायदा उठा सकता है, थोड़ा सतर्क रहने की आवश्यकता है।

वृश्चिक राशि: आज का दिन उत्तम रहने वाला है। आज किसी बड़ी कंपनी से आपके लिए जॉब का ऑफर आ सकता है। आज आप नया हुनर सीखेंगे। परिवार में किसी सदस्य से आपको अच्छी सलाह मिलेगी। आज आपके घर में मेहमान आ सकते हैं, घर में खुशनुमा माहौल बना रहेगा। आज कारोबार में आपको ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है।

धनु राशि: आज आप दिन की शुरुआत अच्छे मूड से करेंगे। आज अपने किसी रुके काम को पूरा करने का सही समय है। सिविल इंजीनीयर्स के लिए दिन बेहतरीन रहेगा। स्वास्थ्य समस्या से परेशान लोग आज खुद को बेहतर महसूस करेंगे। जॉब की तलाश कर रहे लोगों को अच्छी जॉब मिलने के योग हैं। आज आप दूसरों की जरूरतों और भावनाओं को लेकर सेंसिटिव हो सकते हैं।

मकर राशि: आज का दिन आपके लिए खास होने वाला है। आज शांति से कामकाज निपटाने की कोशिश करेंगे तो बिना गड़बड़ के काम समय से पूरा हो जाएगा। आज आपको दूसरों का मूड समझने में बहुत हद तक सफलता मिलेगी। आज पारिवारिक मामले में कोई भी फैसला शांति से लेंगे तो आपका काम बन जाएगा। व्यापार को बढ़ाने के लिए बनाया गया प्लान सफल होगा, व्यापार की गति पहले से तेज होगी।

कुंभ राशि: आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहने वाला है। आज पारिवारिक माहौल अच्छा बना रहेगा। आज धार्मिक गतिविधि में शामिल होने के योग बन रहे हैं। दूसरों के साथ बातचीत या सलाह करने से आपको फायदा होगा। रुके हुए कार्यों को पूरा करने के लिए नए सिरे से कोशिश करें। दांपत्य रिश्ता मजबूत बनेगा, परिवार के साथ क्वालिटी टाइम स्पेंड करेंगे।

मीन राशि: आज का दिन आपके लिए बेहतर रहने वाला है। आज अपने से बड़े या किसी अनुभवी से सलाह लेकर आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे तो आपको सफलता जरूर मिलेगी। आज आप मेहनत, धैर्य और समझदारी से रुके हुए कार्यों को पूरा कर लेंगे। महिलाएं आज घर के कार्यों को पूरा करने में सफल होंगी। आज ऑफिस में आपको कई जिम्मेदारियां दी जा सकती है, जिसे बखूबी निभाने में आप सफल होंगे।

आशाओं के अनंत आकाश में जीवन के प्रगति सोपान।

जिंदगी का कैनवास जन्म से लेकर मृत्यु

संजीव ठाकुर, स्तंभकार, चिंतक, लेखक

तक समुद्र की तरह विराट और गहराई लिए हुए होता है। जीवन में वयक्तिक, पारिवारिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक विकास की संभावनाओं के साथ मनुष्य अपना जीवन प्रारंभ कर विकास प्रगति तथा ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है,बशर्ते उसके व्यक्तित्व में जीवन के प्रति जीजिविषा, संघर्ष करने की क्षमता, अनंत आत्म विश्वास और संयम के घटक मौजूद हो। ऐतिहासिक तौर पर भारतीय विकास सांस्कृतिक संरचना एवं संस्कार के मूलभूत तत्वों को लेकर दुनिया में अभूतपूर्व रहा है। वैसे भी भारतवर्ष सभ्यता से लेकर संस्कृति की प्रकृति के मामले में वैभवशाली इतिहास को समेटे हुए हैं। विकास और प्रगति के सोपान को कोई एक दिन वर्ष अथवा दशक में रेखांकित नहीं किया जा सकता, यह एक निरंतर, सतत एवं समय के साथ चलने वाली क्रिया की प्रतिक्रिया है। और प्रकृति सभ्यता तथा मानव जीवन में परिवर्तन एक अकाट्य सत्य और शाश्वत अभिक्रिया है। व्यक्ति के जीवन तथा समाज या देश में विकास के संदर्भ में एवं घटकों को प्रारंभ से आदमी का धन उपार्जन, गरीबी भुखमरी से लड़ाई भूतकाल की कुरीतियों की विडंबना से संघर्ष का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सब से समाज की प्रगति और विकास में राजाओं, सम्राटों की कूटनीति, राजनीति सर्वोपरि रही है इतिहास से लेकर अब तक मनुष्य देश और विश्व के विकास में राजनैतिक नीति निर्देशक तत्व ही देश को बलवान,शक्तिहीन,भौगोलिक रूप से बड़ा या छोटा बनाते आए हैं। किसी भी राष्ट्र के राजा, सम्राट या राष्ट्र प्रमुख की अपनी क्षमता ,शक्ति, ऊर्जा और उसके विवेक से उस राष्ट्र की प्रगति विशाल या न्यूनतम होती देखी गई है। भूतकाल में कई संघर्षशील एवं उत्साह से लबरेज यात्रियों के वृतांत हमारी नजरों में आए हैं यथा कोलंबस और वास्कोडिगामा जैसे अत्यंत ऊर्जावान संघर्षशील और साहसिक यात्रियों द्वारा लगभग नामुमकिन रास्तों की खोज कर एक मिसाल कायम की है। नेपोलियन का एक बड़ा सूत्र वाक्य था कुछ भी असंभव नहीं है। बिस्मार्क जर्मनी के एक ऐसे सम्राट रहे हैं जिनके बारे में कहा जाता है की उनके हाथों में दो गेंद तथा 3 गेंदें हवा में होती थी, यूरोप का जादूगर भी कहलाता था, पूर्व से ही समुद्रगुप्त ,कनिष्क, सम्राट अशोक, चंद्रगुप्त मौर्य, शेरशाह सूरी जैसे शासकों का अदम्य आत्मविश्वास एवं संघर्ष करने की क्षमता के फल स्वरुप भी भारत आज इस स्वरूप में विद्यमान है। अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से भी किसी भी राष्ट्र में सदैव विकास वैभव और आर्थिक तंत्र को मजबूत करने की संभावनाएं अवस्थित रहती हैं। भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए भारत में गरीबी, भुखमरी ,बाढ़ तथा अन्य विभीषिका सदैव आती जाती रहती हैं। विशाल जनसंख्या के होने के कारण भारत में ही भारत की बड़ी जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है और केवल भारत के कुछ नागरिकों को ही सारी जीवन की सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं, बाकी लोग इन सुविधाओं से वंचित भी हैं। हमारा देश स्वतंत्रता के बाद से ही आवाज की कमी भूख गरीबी भ्रष्टाचार काला धन हवाला कुपोषण बेरोजगारी की बड़ी समस्याओं से जूझ रहा है। भारत की विशाल जनसंख्या के बावजूद ऐतिहासिक तौर पर देश सांस्कृतिक वैचारिक और संस्कारी ग्रुप से सदैव समृद्ध रहा है और धार्मिक रूप से भी देश में ज्ञान की जड़े बहुत गहराई तक हैं। भारत को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करने के लिए वेद, पुराण, उपनिषद, गीता ,रामायण ,महाभारत महा ग्रंथों की पृष्ठभूमि बड़ी ही शक्तिशाली है। देश में अनेक साधु संत ज्ञानी जिनमें मोहम्मद मूसा कबीर, रैदास, नामदेव, तुकाराम चैतन्य, तुलसीदास शंकरदेव जैसे महापुरुषों ने देश के सांस्कृतिक आध्यात्मिक विकास मैं अभूतपूर्व योगदान दिया है। भारत में अनेक विदेशी आक्रमणों को झेल कर उन्हें आत्मसात किया है किंतु हमारी संस्कृत पाली एवं प्राकृत भाषा अन्य भाषाओं के साथ आज भी समृद्ध है। भारत में अनेक भाषा क्षेत्र एवं बोलियां हैं किंतु हिंदी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला, मराठी ,असमिया भाषाएं उसी तरह पल्लवित पुष्पित हो रही हैं जैसे की संस्कृत और प्राकृत पाली भाषा होती रही है। भारत में स्वाधीनता के बाद विकास के प्रगति के पथ पर वैज्ञानिक क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया और पृथ्वी से लेकर नभ तक हर क्षेत्र में मानव की अतीव उत्कंठा ,जीजिविषा के कारण हमने चांद पर भी अपने वायुयान भेजें हैं। देश के नागरिकों की भौतिकवादी सुविधा के लिए भी हमने वतानुकुलित यंत्र ,वायुयान तेज चलने वाली ट्रेनें और वायुमंडल में अनेक ऐसे तथ्यों को जो आज तक छुपे हुए थे उजागर कर अपने महत्व के लिए इसका उपयोग करना शुरू किया है। यह कहावत आशाओं पर आकाश टिका हुआ है और आकाश का कोई अंत नहीं यानी मनुष्य की इच्छाओं का कोई अंत नहीं है मनुष्य पर सही प्रतीत होती है।इसी तरह प्रगति और विकास का भी कोई अंत या अनंत नहीं है। भारत देश में वैश्विक स्तर पर राजनैतिक सामाजिक वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर काफी प्रगति की एवं विश्व में योग अध्यात्म दर्शन का लोहा भी मनवाया है। मनुष्य की अभिलाषा का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है, मनुष्य मूल रूप से अत्यंत महत्वकांक्षी,लोलुप एवं इच्छाओं का दास हुआ करता है, ऐसे में पूर्व में किए गए कार्यों को निरंतर सुधार कर उसे नए रूप में प्राप्त करना मनुष्य की अभिलाषा हो सकती है,पर इसके लिए अथक मेहनत संघर्ष आत्मविश्वास एवं संयम की आवश्यकता होगी तभी जाकर हम अपने नए-नए लक्ष्यों को विकास तथा प्रगति के पैमाने पर टटोलकर आगे बढ़ा सकते हैं। पर लक्ष्य की प्राप्ति के साधन जरूर सच्चे ,पवित्र और मानव कल्याण की ओर अग्रेषित होने चाहिए, तब ही विकास प्रगति चाहे वह आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक अथवा वैज्ञानिक ही क्यों ना हो सफल हो सकती है।

क्या करोड़ों भारतीयों की यात्रा की रीढ़ हमारी रेलवे वाकई 21वीं सदी के लिए तैयार है? : राहुल गांधी

नई दिल्ली (ए.)। भारतीय रेलवे को लेकर एक बार फिर से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने रेलवे की स्थिति को लेकर केंद्र की मोदी सरकार पर निशाना साधा है। एक वीडियो को साक्षा करते हुए राहुल ने एक्स पर लिखा कि कल रायबरेली में मॉडर्न कोच फैक्ट्री के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ बातचीत के दौरान एक महत्वपूर्ण सवाल उठा - क्या करोड़ों भारतीयों की यात्रा की रीढ़ हमारी रेलवे वाकई 21वीं सदी के लिए तैयार है?

कांग्रेस नेता ने कहा कि मौजूदा समय की ज़रूरतों को देखते हुए इसे और आधुनिक, सुरक्षित और सक्षम बनाने के लिए तेज़ी से प्रयास किए जाने चाहिए। रेलवे को सिर्फ यात्रा का साधन न मानकर, प्रोडक्शन और अर्थव्यवस्था के एक मजबूत स्तंभ के रूप में विकसित करना होगा। उन्होंने कहा कि विदेशी मशीनों, मैन्युफैक्चरिंग और इनोवेशन पर निर्भर होने के बजाय हमारा लक्ष्य पूरी तरह से लोकलाइज्ड प्रोडक्शन सिस्टम को मज़बूत बनाने पर होना चाहिए।

गांधी ने कहा कि हमारे इंजीनियर्स और टेक्नीशियन रात-दिन मेहनत करते हैं। यदि उनके परिश्रम को सही दिशा दी जाए और समय की मांग के अनुसार ठोस कदम उठाए जाएं तो रेलवे न सिर्फ परिवहन में बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूती देने में भी अहम भूमिका निभा सकता है। नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार रात भगदड़ मचने ने 18 लोगों की मौत हो गई और 12 से अधिक लोग घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह घटना तब हुई जब कुछ यात्री 'फुटओवर ब्रिज' से उतरते समय फिसलकर अन्य लोगों पर गिर गए।

प्लेटफॉर्म संख्या 14 और 15 पर प्रयागराज (जहां महाकुंभ का आयोजन किया गया है) जाने वाली ट्रेन पर सवार होने के लिए यात्रियों की भीड़ उमड़ पड़ी जिसके बाद वहां भगदड़ मच गई। अस्पताल और पुलिस सूत्रों ने बताया कि 18 लोगों की मौत हुई है। उत्तर रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु उपाध्याय ने बताया कि पटना जाने वाली मगध एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म संख्या 14 पर खड़ी थी और नयी दिल्ली-जम्मू उत्तर संपर्क क्रांति एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म संख्या 15 पर खड़ी थी।

आतिशी ने दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता को लिखा पत्र, महिलाओं के लिए 2500 रुपये की योजना पर बैठक की मांग की

नई दिल्ली (ए.)। दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री और आप विधायक आतिशी ने शनिवार को दिल्ली की नई मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को पत्र लिखकर आप विधायक दल से मिलने के लिए समय मांगा। सीएम को लिखे अपने पत्र में, आतिशी ने दिल्ली की महिलाओं को प्रति माह 2,500 रुपये की वित्तीय सहायता पर चर्चा के लिए उनसे मिलने के लिए कहा है, जिसका वादा प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव अभियान के दौरान किया था। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेता और देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान 31 जनवरी 2025 को दिल्ली में आयोजित एक रैली में दिल्ली की माताओं और बहनों से वादा किया था कि भाजपा सरकार बनने के बाद पहली कैबिनेट बैठक में उनके लिए 2500 रुपये प्रति माह की योजना पारित की जाएगी। उन्होंने कहा था- ये मोदी की गारंटी है। आतिशी ने आगे कहा कि वादे के बावजूद, 20 फरवरी को हुई नवगठित दिल्ली सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में निर्णय नहीं लिया गया। उन्होंने कहा, दिल्ली की माताओं और बहनों ने पीएम मोदी द्वारा दी गई गारंटी पर विश्वास किया था और अब वे ठगा हुआ महसूस कर रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आम आदमी पार्टी का विधायक दल कल 23 फरवरी 2025 को आपसे मिलकर इस मुद्दे पर चर्चा करना चाहता है।

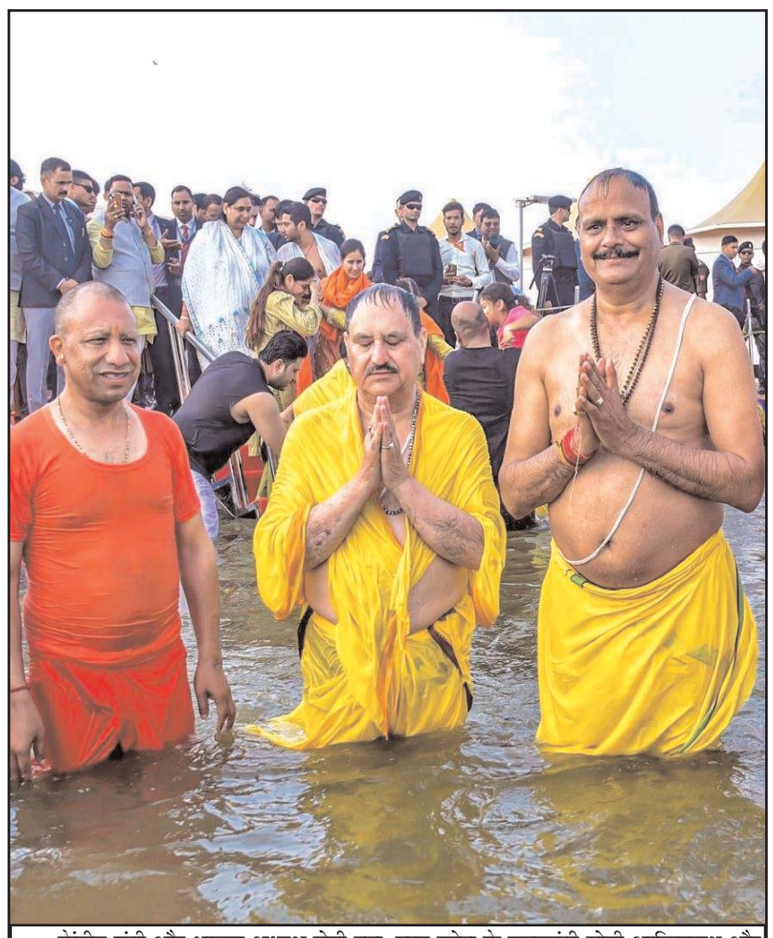

केंद्रीय मंत्री और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ मेला 2025 के दौरान गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम त्रिवेणी संगम में पवित्र डुबकी लगाते हुए।

गुवाहाटी के सरुसजाई स्टेडियम में झुमुर महोत्सव की धूम

गुवाहाटी (आरएनएस)। गुवाहाटी के सरुसजाई स्टेडियम में इन दिनों एक मनमोहक नज़ारा देखने को मिल रहा है, जहां हजारों नर्तक भारतीय लोक नृत्य झुमूर के अभ्यास में मग्न हैं। रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजे ये कलाकार अपनी तालबद्ध मुद्राओं और मनमोहक भाव-भंगिमाओं के साथ इस नृत्य को जीवंत कर रहे हैं।

झुमूर नृत्य, जो पूर्वोत्तर भारत और पश्चिम बंगाल के जनजातीय समुदायों की संस्कृति से जुड़ा है, अपनी आकर्षक लय और सामूहिकता के लिए जाना जाता है। ढोल की थाप पर थिरकते इन नर्तकों की ऊर्जा और समर्पण से पूरा स्टेडियम झूम उठा है। आगामी झुमुर महोत्सव में यह नृत्य आकर्षण का केंद्र होगा, जहां दर्शक इस लोक नृत्य की जीवंतता का आनंद उठा सकेंगे। इस महोत्सव के माध्यम से न केवल पारंपरिक नृत्य को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि स्थानीय संस्कृति और विरासत को भी संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। तो तैयार हो जाइए, झुमूर के सुर और ताल में खो जाने के लिए!

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने नई दिल्ली में भैरो मार्ग से सराय काले खां रिंग रोड के सड़क निर्माण कार्य का निरीक्षण किया।

बीबीसी इंडिया पर ईडी ने लगाया 3 करोड़ से ज्यादा का जुर्माना, तीनों डायरेक्टर भी फंसे; जानें क्या है मामला

नई दिल्ली (आरएनएस)। विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के उल्लंघन मामले में ईडी ने बीबीसी पर 3,44,48,850 रुपये की पेनाल्टी लगाई है। इसके साथ ही उस समय कंपनी के आपरेशंस को देख रहे तीनों निदेशकों पर अलग-अलग 1,14,82,950 रुपये की पेनाल्टी लगाई है।बीबीसी वर्ल्ड सर्विस इंडिया पर डिजिटल मीडिया में 26 प्रतिशत विदेशी निवेश की सीमा का नियम लगाने के बाद भी 100 प्रतिशत विदेशी निवेश जारी रखने का आरोप है। ईडी की ओर से 21 फरवरी को जारी आदेश के अनुसार, बीबीसी वर्ल्ड सर्विस इंडिया पर पेनाल्टी नहीं जमा करने की स्थिति में प्रतिदिन पांच हजार रुपये के जुर्माने का प्रवधान है। यह जुर्माने की राशि 15 अक्टूबर, 2021 से ली जाएगी।दरअसल, डिपार्टमेंट आफ प्रमोशन आफ इंडस्ट्री एंड इंटरनल ट्रेड ने 18 सितंबर, 2019 को प्रेस नोट जारी कर डिजिटल मीडिया में विदेशी निवेश की सीमा 26 प्रतिशत निर्धारित किए जाने की जानकारी दी थी। इसी प्रेस नोट में कंपनियों को नए नियम के मुताबिक विदेशी निवेश को 26 प्रतिशत तक लाने के लिए 15 अक्टूबर, 2021 तक का समय दिया गया था। लेकिन बीबीसी वर्ल्ड सर्विस इंडिया के निदेशकों ने जानबूझकर इस समयसीमा का उल्लंघन किया और 100 प्रतिशत विदेशी निवेश जारी रखा।ईडी के आदेश के अनुसार, अब बीबीसी वर्ल्ड सर्विस इंडिया को 15 अक्टूबर, 2021 के बाद पेनाल्टी की पूरी रकम 3.44 करोड़ रुपये जमा करने के दिन तक प्रतिदिन पांच हजार रुपये के हिसाब से जुर्माना भी देना होगा। बीबीसी वर्ल्ड सर्विस इंडिया के तत्कालीन तीनों निदेशकों गिल्स एंटनी हंट, इंदु शेखर सिन्हा और पाल मिशेल गिबन्स को विदेशी निवेश के

नए नियम का जानबूझकर पालन नहीं करने का दोषी पाया गया है।

राजस्थान भाजपा की कमान फिर मदन राठौड़ के हाथों में : 7 महीने में दोबारा बने प्रदेशाध्यक्ष,चुनाव प्रभारी विजय रुपाणी ने की घोषणा

जयपुर (आरएनएस)। राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने एक बार फिर मदन राठौड़ को प्रदेशाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी है। महज सात महीने के अंतराल में यह दूसरा मौका है जब राठौड़ को पार्टी नेतृत्व ने प्रदेश की कमान सौंपी है। उनकी नियुक्ति की घोषणा मुख्यमंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री की मौजूदगी में की गई, जिससे इस फैसले का राजनीतिक महत्व और भी बढ़ गया है। मदन राठौड़ की दोबारा नियुक्ति को आगामी चुनावों के मद्देनजर एक रणनीतिक कदम माना जा रहा है। पार्टी नेतृत्व को उम्मीद है कि उनके नेतृत्व में भाजपा राज्य में अपनी पकड़ मजबूत करेगी। राठौड़ के पिछले कार्यकाल में संगठनात्मक मजबूती और चुनावी तैयारियों को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है।

पश्चिम बंगाल के बीरभूम में तृणमूल कार्यकर्ता की पीट-पीटकर हत्या

कोलकाता (ए.)। पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में तृणमूल कांग्रेस के एक कार्यकर्ता की कथित तौर पर पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि शुक्रवार रात को मोटरसाइकिल सवार शेख नियामुल को कुछ लोगों ने कंकराटाला बस स्टैंड के पास रोका और फिर डंडों व पत्थरों से उसकी पिटाई की। पुलिस ने बताया कि घायल नियामुल को सिउरी सदर अस्पताल ले जाया गया और फिर एक निजी अस्पताल भेजा गया लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। नियामुल के भाई और तृणमूल कार्यकर्ता इनामुल शेख ने आरोप लगाया कि उनके भाई की हत्या पार्टी के प्रतिद्वंद्वी गुट ने की है, जिसने पिछले लोकसभा चुनावों में भाजपा के लिए काम किया था। जिला तृणमूल कांग्रेस ने हालांकि इस दावे का खंडन किया और आरोप लगाया कि 2026 के विधानसभा चुनावों से पहले आतंक फैलाने के लिए भाजपा सदस्यों ने नियामुल की हत्या की है। आरोपों को खारिज करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने दावा किया कि यह हत्या राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति को दर्शाती है। पुलिस ने कहा कि हत्या के पीछे के लोगों की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। उन्होंने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है।

पहले शराब पी, फिर एक दोस्त ने दूसरे से की सेक्स की डिमांड; इनकार करने पर उतारा मौत के घाट

सिद्दीपेट , (आरएनएस)। तेलंगाना में सिद्दीपेट में एक चौंकाने वाला मामले सामने आया है। जहां दो दोस्तों ने पहले शराब पी और बाद में एक ने दूसरे की हत्या कर दी। पुलिस के मुताबिक, जांच में पाया गया कि आरोपी ने इस वारदात को इसलिए अंजाम दिया क्योंकि वह अप्राकृतिक सेक्स का विरोध कर रहा था। पुलिस ने बताया, 'आरोपी का नाम पर्वतम राजू है जो करीमनगर जिले के रेकुर्थी का रहने वाला है। वह 40 साल का है। केसीआर नगर के रहने वाले 38 वर्षीय बोडासु श्रीनिवास के साथ उसके बहुत करीबी संबंध थे। राजू की पत्नी उसे छोड़कर चली गई थी। ऐसे में वह काफी समय से अकेला रह रहा था। 19 फरवरी को राजू और श्रीनिवास की मुलाकात हुई। दोनों ने शराब पी। इसके बाद राजू ने श्रीनिवास के साथ अप्राकृतिक सेक्स करने की कोशिश की। श्रीनिवास इसका विरोध करने लगा और उसे रोकने का प्रयास किया तो दोनों के बीच झगड़ा हो गया और राजू ने श्रीनिवास को डंडे से पीट-पीट कर मार डाला और वहां से भाग गया।

राजस्थान सीएम को जेल से मिली जान से मारने की धमकी, प्रशासन में मचा हड़कंप

जयपुर (आरएनएस)। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को एक बार फिर जान से मारने की धमकी मिली है। जयपुर पुलिस कंट्रोल रूम में प्राप्त सूचना के अनुसार धमकी दौसा सेंट्रल जेल, श्यालावास से आई। पुलिस के मुताबिक, इस बार धमकी फोन पर 12 बजे से पहले दी गई। पहले भी इसी जेल से धमकी मिल चुकी थी, जिसमें पुलिस द्वारा सर्च ऑपरेशन के दौरान जेल के अंदर मोबाइल फोन बरामद किया गया था। धमकी देने वाले बंद कैदी का नाम रिंकू रडवा है, जो 2022 से दौसा सेंट्रल जेल में बंद हैं। रिंकू रडवा को पॉक्सो एक्ट के तहत बंद किया गया है, जिसका उद्देश्य बच्चों को यौन शोषण से बचाना है। इस एक्ट के तहत दोषियों को कड़ी सजा दी जाती है।इस घटना के बाद जेल प्रशासन पर कड़ी नजर रखी जा रही है, क्योंकि इसी जेल से पहले भी इसी तरह की धमकी मिल चुकी थी। पुलिस जांच जारी है। बता दें कि इससे पहले भी सीएम को जान से मारने की धमकी मिल चुकी है। तब भी दौसा की सेंट्रल जेल से ही धमकी दी गई थी।

मेरे जैसे लाखों लोगों को आरएसएस ने देश के लिए जीने की प्रेरणा दी है : पीएम मोदी

नई दिल्ली (आरएनएस)। पीएम नरेंद्र मोदी ने आज कहा कि 100 वर्ष पहले जिस राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बीज बोया गया था, वह आज एक वट वृक्ष के रूप में भारत की महान संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुंचा रहा है। पीएम मोदी ने आगे कहा, 'यह उनका सौभाग्य है कि उनके जैसे लाखों लोगों को इस संगठन ने देश के लिए जीने की प्रेरणा दी है।'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब मराठी साहित्य सम्मेलन का दीप प्रज्जवलन करने पहुंचे तो उन्होंने शरद पवार से आगे आने और उनके साथ सम्मान करने का अनुरोध किया। इसके बाद जब शरद पवार अपना संबोधन समाप्त करके अपनी सीट की ओर लौट रहे थे तो पीएम मोदी ने उनको सीट पर बैठने में मदद की और उनको पानी का गिलास भरकर दिया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन के दौरान पिछले दिनों मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने का भी उल्लेख किया और कहा कि देश और दुनिया में 12 करोड़ मराठी भाषी लोगों को इसका दशकों से इंतजार था। उन्होंने कहा, 'यह काम पूरा करने का अवसर मुझे मिला। मैं इसे अपने जीवन का बड़ा सौभाग्य मानता हूं।' प्रधानमंत्री ने कहा कि अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन एक भाषा या राज्य तक सीमित आयोजन नहीं है, मराठी साहित्य के इस सम्मेलन में आजादी की लड़ाई की महक है।

अंतर्राज्यीय चोर गिरोह का पुलिस ने किया पर्दाफाश

रायपुर, (आरएनएस)। जानकारी के मुताबिक 21 दिसंबर 2024 को प्रार्थी कमल साहू पिता बालगोविंद साहू उम्र 22 साल निवासी मकान नंबर सी 8 राधा स्वामी नगर भाटागांव थाना पुरानी बस्ती जिला रायपुर में रिपोर्ट दर्ज कराया कि 20 दिसंबर 2024 को करीब 11:30 बजे अपने माता-पिता और पत्नी के साथ अपने गृहग्राम उरला दुर्ग गया था.जब वापस राधा स्वामी नगर स्थित अपने मकान में आया तो देखा कि मेन गेट का ताला टूटा हुआ था. बेडरुम में गया तो देखा कि लाइट जल रही थी. कमरे में रखे लकड़ी की आलमारी का ताला टूटा हुआ था. अंदर का सामान बिखरा पड़ा था. आलमारी के दराज में रखे सोने चांदी के जेवर व नगदी रकम कुल जुमला 4,80,000 रुपए को कोई अज्ञात चोर चोरी कर ले गया। इस रिपोर्ट पर अज्ञात चोर के खिलाफथाना पुरानी बस्ती में जुर्म दर्ज कर मामले को जांच में लिया गया. इस मामले की जांच के दौरान अज्ञात चोर के पता चला लगाने के लिए घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे को चेक किया गया।

राहुल बाबा हमारा मजाक उड़ाते थे, हमने एक क्लिक से लोगों के खाते में पैसे डाले, महाराष्ट्र में बोले अमित शाह

नई दिल्ली (ए.)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के अनुसार, महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों में महायुति गठबंधन की जीत प्रामाणिक शिवसेना और एनसीपी के लिए जनता के समर्थन का संकेत देती है। प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को धनराशि वितरित करते हुए एक समारोह में अमित शाह ने नई सरकार का समर्थन करने के लिए महाराष्ट्र के लोगों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने शिवसेना और राकांपा के भीतर वास्तविक गुटों पर जनता के स्पष्ट निर्णय पर जोर दिया। एनडीए की तीसरी बार जीत के साथ, पीएम मोदी ने पीएमएवाई के दूसरे चरण की शुरुआत की, जिसमें 20 लाख परिवारों को आवास की सहायता दी गई। इस योजना के तहत सबसे अधिक लाभार्थियों के साथ महाराष्ट्र अग्रणी है, जो एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक उत्थान को दर्शाता है। इस योजना का लक्ष्य 2029 तक देशभर में बुनियादी ढांचे के विकास को बढ़ावा देते हुए पांच करोड़ घर उपलब्ध कराना है। उन्होंने कहा कि हमारे देश में 1,465 शहरी सहकारी बैंक हैं, और 400 से अधिक केवल महाराष्ट्र में हैं। हम एक MBRELLA संगठन को सक्रिय कर रहे हैं, जो सभी सहकारी बैंकों को हर संभव तरीके से मदद करेगा। UMBRELLA संस्था के लिए 300 करोड़ रुपये का बजट भी मंजूर किया गया है। अमित शाह ने कहा कि जब पीएम मोदी ने जनधन खाते खोले, तो राहुल गांधी ने उनसे पूछा कि पीएम मोदी खाते में क्या ट्रांसफर करेंगे? मैं आपको बताना चाहता हूं, राहुल गांधी, कैसे पीएम मोदी ने एक क्लिक से लाभार्थी के खाते में धनराशि ट्रांसफर की। अमित शाह ने आज महाराष्ट्र के पुणे में पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की 27वीं बैठक की अध्यक्षता की।

जो अपने काम में असफल होते हैं, वो लक्ष्य की समय-सीमा बदलते हैं : अखिलेश यादव

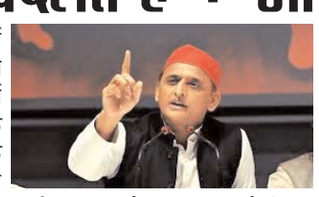

लखनऊ (ए.)। समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने वर्ष 2029 तक राज्य की अर्थव्यवस्था को एक हजार अरब डॉलर किये जाने के सरकार के दावे पर तंज कसते हुए कहा कि जो अपने काम में असफल होते हैं, वो लक्ष्य की समय-सीमाज् बदलते हैं। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, जो अपने काम में असफल होते हैं, वो लक्ष्य की समय-सीमा बदलते हैं, देश-प्रदेश का भविष्य नहीं। उन्होंने राज्य में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, 2021 में भाजपाइयों ने कहा था कि 2024 तक उप्र की अर्थव्यवस्था एक ट्रिलियन डॉलर (एक हजार अरब डॉलर) की हो जाएगी और अब 2025 में कह रहे हैं, 2029 में उप्र की अर्थव्यवस्था एक ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी। यादव ने कहा, जनता को न इनके बीते कल के वादे पर विश्वास था, न आने वाले कल के दावे पर भरोसा है। झूठ भाजपा का पर्याय बन गया है। जनमानस कहे आज का, नहीं चाहिए भाजपा! उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को विधानसभा में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा के अनुरूप प्रदेश एक हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में अग्रसर है। विधानसभा में शुक्रवार को प्रश्नकाल में समाजवादी पार्टी की विधायक डॉ रागिनी सोनकर के सवालों का जवाब देते हुए योगी ने कहा, पिछले आठ वर्ष की डबल इंजन की सरकार के प्रयास से यह दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बना है और 2029 में उप्र एक हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था भी बनेगा, इस बात के लिए पूरे सदन को आश्वस्त करता हूं।

महाकुंभ को लेकर अफवाह फैलाने वाले सोशल मीडिया अकाउंट पर यूपी पुलिस का एक्शन

प्रयागराज (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित भव्य महाकुंभ में देश-विदेश से श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगा रहे हैं। यहां राज्य सरकार और मेला प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं के लिए उचित व्यवस्था की गई है। लेकिन, कुछ लोग सोशल मीडिया पर चंद व्यूज पाने के लिए अफवाह फैला रहे हैं। ऐसे लोगों के खिलाफ यूपी पुलिस ने एक्शन लेना शुरू कर दिया है। यूपी पुलिस के अनुसार, प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ से संबंधित भ्रामक पोस्ट करने वाले 11 मामलों में कुल 137 विभिन्न सोशल मीडिया अकाउंट के विरुद्ध कार्रवाई की गई है। बता दें कि उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा निरंतर सोशल मीडिया की सघन मॉनिटरिंग की जा रही है। सोशल मीडिया मॉनिटरिंग के दौरान यह प्रकाश में आया है कि बीते एक माह के भीतर कुछ तत्वों द्वारा महाकुंभ के खिलाफ भ्रामक नैरेटिव तैयार करने की साजिश की जा रही है और प्रयास किया जा रहा है कि कैसे उत्तर प्रदेश सरकार की छवि को धूमिल किया जाए।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लखीमपुर खीरी में पवित्र गोला गोकर्णनाथ स्थित शिव मंदिर कॉरिडोर के शिलान्यास एवं लोकार्पण में शामिल हुए।

दिव्या ने किया रश्मिका मंदाना को सपोर्ट, 'छावा' में एक्टिंग को लेकर एक्ट्रेस को मिल रही है आलोचना

फिल्म 'छावा' में दिव्या दत्ता ने सोयराबाई की भूमिका निभाई है। इस भूमिका में उनके अभिनय को काफी सराहा गया है, जबकि फिल्म में उनके हिस्से बहुत अधिक सींस नहीं थे। वहीं फिल्म में रश्मिका मंदाना ने भी येशूबाई की भूमिका की, जो विक्की कौशल के किरदार संभाजी महाराज की पत्नी हैं। इस किरदार में रश्मिका के अभिनय को कुछ दर्शकों ने पसंद नहीं किया है। रश्मिका की सोशल मीडिया पर काफी आलोचना हो रही है। ऐसे में दिव्या दत्ता ने उन्हें सपोर्ट किया है।

रश्मिका को लेकर दिव्या ने क्या कहा

दिव्या दत्ता ने हाल ही में इंडिया टुडे को दिए गए इंटरव्यू में कहा है कि रश्मिका मंदाना की पिछली फिल्में हिट रही हैं, ऐसे में उनमें कोई तो बात होगी कि दर्शक इस तरह का रेस्पॉन्स देते हैं। वह बताती हैं कि रश्मिका बहुत प्यारी लड़की हैं, उनकी आंखें पर्दे पर मन को मोह लेती हैं। वह एक अच्छी एक्ट्रेस हैं।

अपने किरदार को लेकर क्या सोचती हैं

अपने किरदार के बारे में दिव्या दत्ता बताती हैं कि मैंने फिल्म 'छावा' में सोयराबाई का रोल किया है, इसके लिए दर्शकों की तरफ से सराहना मिली है। साथ ही कुछ लोगों का कहना है कि मेरे किरदार को लंबा होना चाहिए था। लेकिन सबसे अहम बात है कि हमारी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर चल रही है।

कई उम्दा कलाकार फिल्म में हैं शामिल

फिल्म 'छावा' में विक्की कौशल, रश्मिका मंदाना, दिव्या दत्ता के अलावा आशुतोष राणा, प्रदीप राम सिंह रावत, संतोष जुवेकर सिंह, डायना पेंटी ने अहम भूमिकाएं निभाई हैं। साथ ही औरंगजेब के रोल में अक्षय खन्ना और कवि कलश के रोल में विनीत कुमार नजर आए हैं। इन सभी कलाकारों को दर्शकों ने काफी सराहा है।

रोहित रॉय ने हिना खान की तारीफ में किया पोस्ट, अभिनेत्री की हिम्मत को सलाम करते आए नजर

हिना खान तीसरी स्टेज के ब्रेस्ट कैंसर से जूझ रही हैं। अभिनेत्री का उपचार चल रहा है। हिना अक्सर अपनी हेल्थ को लेकर सोशल मीडिया पर फैंस के साथ जानकारी साझा करती नजर आती हैं। इस मुश्किल वक्त का सामना हिना काफी सकारात्मक तरीके से कर रही हैं। एक तरफ वह अपने घूमने-फिरने के शौक को भी पूरा कर रही हैं तो वर्क फ्रंट पर भी एक्टिव हैं। फैंस और इंडस्ट्री के तमाम सितारे हिना की तारीफ करते नजर आते हैं। हाल ही में रोहित रॉय भी हिना की हिम्मत को सलाम करते दिखे हैं।

रोहित ने हिना की तारीफ में लिखी ये बात

रोहित रॉय ने आज शनिवार को इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने हिना के साथ अपनी एक फोटो शेयर की है। इसके साथ लिखा है, 'यह तारीफ भरा पोस्ट मेरी जानकारी में सबसे मजबूत लड़कियों में से एक के लिए है। वह जंग लड़ रही है और मुझे यकीन है कि वह समय के साथ इसे हरा देगी। लेकिन, इस मुश्किल वक्त में और जब वह लड़ रही है, तब भी उसके चेहरे की मुस्कान कभी नहीं जाती। तुम्हें और हिम्मत मिले हिना खान'।

'हिना ने कहा शुक्रिया'

रोहित के पोस्ट के पोस्ट पर हिना खान ने कमेंट किया है और उनका आभार जताया है। हिना ने लिखा है, 'बहुत बहुत शुक्रिया। जिंदगी ने मुझे नींबू दिए, मैंने उनसे करतब दिखाना सीखा। यह सीख मुझे मेरे पिताजी ने दी। आप मुझे अपनी दुआओं में याद रखिए प्लीज'।

हिना के लिए फैंस ने की दुआ

रोहित के पोस्ट पर हिना के फैंस के खूब कमेंट आ रहे हैं। यूजर्स अभिनेत्री के जल्द स्वस्थ होने की दुआ कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, 'खूबसूरत दिल वाले लोग ऐसे ही होते हैं, जिंदगी उनकी परीक्षा लेती है'। एक यूजर ने लिखा, 'मुस्कुराना कोई हिना से पूछे'। हिना के वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें हाल के दिनों में 'गृहलक्ष्मी' शो में देखा गया।

कंगना रनौत की फिल्म इमरजेंसी की ओटीटी रिलीज डेट आउट, 17 मार्च को नेटफ्लिक्स पर रिलीज होगी

कंगना रनौत की बायोग्राफिकल फिल्म इमरजेंसी इसी साल 17 जनवरी को गणतंत्र दिवस के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी. फिल्म को दर्शकों और समीक्षकों से मिली-जुली प्रतिक्रियाएं मिली. सिनेमाघरों में ठीक-ठाक परफॉर्म करने के बाद इमरजेंसी ओटीटी पर स्ट्रीम होने के लिए तैयार है. कंगना रनौत ने आज, 21 फरवरी को अपनी नई फिल्म की ओटीटी रिलीज की तारीख का खुलासा किया है.

थिएटिकल रिलीज के 1 महीने बाद कंगना रनौत अपनी नई फिल्म इमरजेंसी की ओटीटी रिलीज के लिए कमर कस ली हैं. पंगा एक्ट्रेस ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम के जरिए इमरजेंसी की ओटीटी रिलीज की डेट और प्लेटफार्म के बारे में जानकारी दी. उन्होंने इंदिरा गांधी की तस्वीरों का एक कोलाज पोस्ट किया है और कैप्शन में लिखा है, 17 मार्च को नेटफ्लिक्स पर.सैकनिल्क के मुताबिक, 17 जनवरी 2025 को बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई इमरजेंसी ने ओपनिंग डे पर 2.5 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया. पहले सप्ताह में फिल्म ने 14.3 करोड़ रुपये, दूसरे सप्ताह में 3.18 करोड़ रुपये और तीसरे सप्ताह में 81 लाख रुपये कमाए. 24 दिनों के बाद, फिल्म सिनेमाघरों से उतर गई. इन 24 दिनों में फिल्म ने भारत में 18.31 करोड़ रुपये कमाए. वहीं दुनियाभर में इमरजेंसी ने 23.75 करोड़ रुपये बिजनेस किया.इमरजेंसी स्वतंत्रता के बाद के भारतीय इतिहास के एक घटना दौर को दर्शाती है. फिल्म में कंगना रनौत ने पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाई है. कंगना न केवल इमरजेंसी में मुख्य भूमिका निभा रही हैं, बल्कि उन्होंने इसका निर्देशन भी किया है. यह फिल्म 1975 से 1977 तक इंदिरा के लगाए गए 21 महीने के इमरजेंसी को दर्शाती है, जिसे अक्सर स्वतंत्र भारत का सबसे काला अध्याय कहा जाता है.

इमरजेंसी में कंगना के अलावा, जयप्रकाश नारायण की भूमिका में अनुपम खेर, अटल बिहारी वाजपेयी की भूमिका में श्रेयस तलपड़े, महिमा चौधरी पुपुल जयकर, मिलिंद सोमन फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ और विशाख नायर संजय गांधी की भूमिका में नजर आए हैं.

नया गाना 'सांवरिया जी' हो रहा तेजी से वायरल

मुंबई (ए.)। फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी का नया गाना 'सांवरिया जी' रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।फिल्म के पहले रिलीज हुए गाने 'गोरी है कलाइयाँ' और 'इक वारी' को दर्शकों ने खूब पसंद किया था, और अब 'सांवरिया जी' भी उसी जादू को बरकरार रखने के लिए तैयार है।

इस गाने में रकुल प्रीत सिंह और भूमि पेडनेकर के बीच दिलचस्प टकराव देखने को मिल रहा है, जहाँ दोनों अर्जुन कपूर को जीतने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रही हैं। गाने को सोहेल सेन और वर्षा सिंह धनोआ ने गाया है, जबकि इसके बोल मुदस्सर अज़ीज़ ने लिखे हैं। संगीत भी सोहेल सेन ने ही दिया है, जिन्होंने प्रतिक लालजी के साथ इस ट्रैक का प्रोडक्शन और अरेंजमेंट किया है। 'सांवरिया जी' पूरी तरह से एनर्जेटिक और पेप्पी नंबर है, जो दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर रहा है। इस गाने में रकुल और भूमि का कैटफाइट अंदाज फिल्म की लव ट्राएंगल थीम को और भी दिलचस्प बना देता है। फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी में अर्जुन कपूर के अलावा रकुल प्रीत सिंह और भूमि पेडनेकर मुख्य भूमिकाओं में हैं। इसके अलावा शक्ति कपूर, डिनो मोरिया और हर्ष गुर्जराल भी अहम किरदार निभा रहे हैं।

इस फिल्म का निर्देशन मुदस्सर अज़ीज़ ने किया है, जो इससे पहले हैप्पी भाग जाएगी और पति पत्नी और वो जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। फिल्म की कहानी एक मजेदार लव ट्राएंगल पर आधारित है, जिसमें हंसी, प्यार और मनोरंजन का भरपूर तड़का लगाया गया है। मेरे हसबैंड की बीवी 21 फरवरी 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए पूरी तरह तैयार है। वाशु भगनानी और पूजा फिल्म्स द्वारा प्रस्तुत इस फिल्म का निर्माण वाशु भगनानी, जैकी भगनानी और दीपशिखा देशमुख ने किया है। फिल्म के गाने और ट्रेलर को लेकर पहले ही काफी चर्चा हो चुकी है, और अब दर्शक इसकी रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

क्या च्यूइंग गम चबाने से घट सकता है आपका वजन? जानिए यह कैसे होता है मददगार

बचपन में जब हम च्यूइंग गम खाने की जिद किया करते थे, तब मम्मी पापा यह कहकर मना कर दिया करते थे कि यह गले में चिपक जाता है।

इसी कारण ज्यादातर लोगों ने इसका सेवन बंद कर दिया था। हालांकि, इन दिनों च्यूइंग गम चर्चा का विषय बना हुआ है, क्योंकि लोग इसके फायदों को पहचानने लगे हैं।

दरअसल, कहा जा रहा है कि च्यूइंग गम चबाने से वजन घटाने में मदद मिल सकती है। आइए जानते हैं कैसे।

भूख को कम करता है

च्युइंग गम के मुख्य लाभों में से एक यह है कि इसके जरिए भूख को कम किया जा सकता है। जब आप च्युइंग गम चबाते हैं तो आपके दिमाग को लगता है कि आप कुछ खा रहे हैं।

इस अनुभूति के जरिए भूख की भावना को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

जो लोग खान-पान के बाद या पहले च्युइंग गम चबाते हैं, उन्हें बार-बार भोजन करने की जरूरत महसूस नहीं होती, जिससे वजन कम करने में सहायता मिलती है।

जंक फूड की लालसा को नियंत्रित करता है

मीठे और जंक फूड आदि की लालसा होना आम बात है, लेकिन यह वजन घटाने के प्रयासों के बीच बाधा बन सकती है। इसे रोकने के लिए आप च्युइंग गम चबा सकते हैं।

अध्ययन के अनुसार, भोजन से पहले और बाद में च्युइंग गम चबाने से अस्वास्थ्यकर स्नैक्स खाने की लालसा कम हो जाती है।

वसा, चीनी, तेल-मसालों और अतिरिक्त कैलोरी से लैस भोजन के बजाय इसे चबाना बेहतर हो सकता है।

दैनिक कैलोरी सेवन को घटाता है

च्युइंग गम खाने से वजन कम करने में इसीलिए भी मदद मिलती है, क्योंकि यह दैनिक कैलोरी की मात्रा को भी कम करता है।अगर आपको हल्की भूख महसूस हो तो स्नैक्स आदि की जगह पर च्युइंग गम चबाएं। इससे आपकी दैनिक कैलोरी की संख्या में इजाफा भी नहीं होगा और आपकी तृप्ति की भावना भी बढ़ जाएगी।

इससे सीधे तौर पर तो वजन नहीं घटेगा, लेकिन यह थोड़ी कैलोरी जलाने में मदद करेगा।

क्या च्यूइंग गम चबाने से आपका चेहरा पतला हो सकता है?

काफी लोग मानते हैं की रोजाना च्यूइंग गम चबाने से चेहरे को पतला किया जा सकता है। हालांकि, यह असल में सच नहीं होता है। युइंग गम चबाने के लिए लगातार मुंह चलाना पड़ता है, इसलिए यह चेहरे और जबड़े की मांसपेशियों को सक्रिय कर सकता है।इससे मुख्य रूप से मांसपेशियों की एक्सरसाइज होती है, जिससे उस विशिष्ट अंग की मांसपेशियां टोन होती हैं। हालांकि, इससे चेहरे की चर्बी को कम नहीं किया जा सकता है।

जान लीजिए च्युइंग गम खाने के दुष्प्रभाव

कभी-कभी च्यूइंग गम चबाना ठीक है, लेकिन इसे रोजाना की डाइट का हिस्सा नहीं बनाना चाहिए। इसमें किसी प्रकार का पोषण नहीं होता ओर यह शक्कर से भरपूर होता है।

रोजाना च्यूइंग गम चबाने से दांत सड़ सकते हैं और उनका इनेमल खराब हो सकता है। इसके अलावा, कुछ लोगों को इसे चबाने के कारण जबड़े के दर्द से भी जूझना पड़ सकता है।

साथ ही, च्यूइंग गम ब्लड शुगर को बढ़ा सकता है और पाचन को बिगाड़ सकता है।

कृति सैनन इस साल नहीं करेंगी शादी, तेरे इश्क में की शूटिंग में हैं व्यस्त

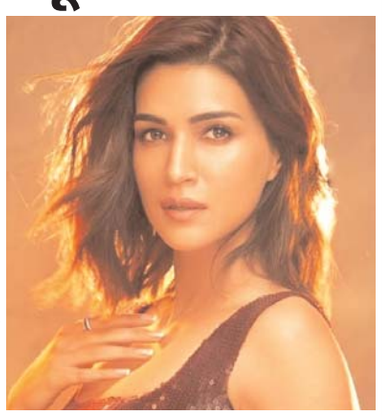

अभिनेत्री कृति सैनन पिछले काफी समय से बिजनेसमैन कबीर बहिया के साथ अपने अफेयर को लेकर चर्चा में हैं। खबर है कि दोनों इस साल शादी करने वाले हैं। हाल ही में कृति अपने बॉयफ्रेंड कबीर के घरवालों से मिलने दिल्ली पहुंचीं। अब ताजा खबर यह है कि कृति इस साल शादी नहीं करेंगी। दरअसल, अभिनेत्री इस वक्त अपनी आगामी परियोजनाओं की शूटिंग में व्यस्त हैं, जिसके चलते वह इस साल शादी के बंधन में नहीं बंधेगी।

कृति इन वक्त दिल्ली में हैं और अपनी आगामी फिल्म तेरे इश्क में की शूटिंग कर रही हैं। इसके तुरंत बाद कृति अपनी अगली फिल्म की तैयारी शुरू कर देंगी, जो कॉकटेल का सीक्वल हो सकता है। सूत्र ने कहा, इस साल कृति के पास समय ही कहां है? वह अभी दिल्ली में हैं और तेरे इश्क में की शूटिंग में व्यस्त हैं। इसके बाद वह एक सीक्वल की शूटिंग करेंगी।बीच में कोई ब्रेक नहीं है।

पिछले दिनों कबीर और कृति को बेंगलुरु में एक शादी में साथ देखा गया था, जहां दोनों ने कपड़े भी एक ही रंग के पहने हुए थे और दोनों शादी का जमकर लुत्फ उठा रहे थे। बता दें कि 1999 में लंदन के एक अमीर परिवार में जन्मे 25 साल के कबीर ने 2018 में इंग्लैंड के बोर्डिंग स्कूल मिलफील्ड में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। कबीर ब्रिटेन की एक बड़ी ट्रेवल एजेंसी के मालिक कुलजिंदर बहिया के बेटे हैं।

ब्लैकहेड्स से छुटकारा पाने के लिए आजमाएं ये प्रभावी घरेलू नुस्खे

ब्लैकहेड्स चेहरे की सुंदरता को कम कर सकते हैं और कई लोगों के लिए चिंता का कारण बन सकते हैं।ये ब्लैकहेड्स त्वचा में तेल, गंदगी और मृत कोशिकाओं के जमाव से होते हैं। हालांकि, बाजार में कई उत्पाद उपलब्ध हैं, लेकिन घरेलू नुस्खे भी प्रभावी हो सकते हैं।आइए आज हम आपको कुछ सरल और प्राकृतिक तरीके बताते हैं, जो आपको ब्लैकहेड्स से छुटकारा दिलाने में मदद कर सकते हैं।

नींबू और शहद का उपयोग करें

नींबू और शहद का मिश्रण ब्लैकहेड्स को हटाने में बहुत कारगर होता है।

नींबू में प्राकृतिक एसिड होते हैं, जो त्वचा को साफ करते हैं, जबकि शहद त्वचा को नमी प्रदान करता है।लाभ के लिए एक चम्मच नींबू के रस में एक चम्मच शहद मिलाएं और इसे प्रभावित क्षेत्र पर लगाएं। इसे 10-15 मिनट तक छोड़ दें, फिर गुनगुने पानी से धो लें।

इस प्रक्रिया को सप्ताह में दो बार करने से अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

बेकिंग सोडा का स्क्रब बनाएं

बेकिंग सोडा एक प्राकृतिक एक्सफोलिएंट है, जो मृत कोशिकाओं को हटाकर त्वचा को साफ करता है।लाभ के लिए एक चम्मच बेकिंग सोडा में थोड़ा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को हल्के हाथों से चेहरे पर मलें, खासकर जहां ब्लैकहेड्स हों वहां ध्यान दें। कुछ मिनट तक मसाज करने के बाद ठंडे पानी से धो लें।यह उपाय सप्ताह में एक बार करें ताकि आपकी त्वचा स्वस्थ बनी रहे और ब्लैकहेड्स कम हों जाएं।

ओटमील मास्क आजमाएं

ओटमील मास्क भी ब्लैकहेड्स के लिए फायदेमंद होता है क्योंकि यह त्वचा की गहराई तक सफाई करता है और अतिरिक्त तेल निकालता है।लाभ के लिए ओटमील पाउडर में थोड़ा-सा दही मिलाकर पेस्ट तैयार करें और इसे चेहरे पर लगाएं। 15-20 मिनट बाद हल्के हाथों से रगड़ते हुए धो लें ताकि आपकी त्वचा तरोताजा महसूस हो सके।इस मास्क का उपयोग हफ्ते में दो बार किया जा सकता है, जिससे आपकी त्वचा साफ-सुथरी दिखने लगेगी।

हल्दी और बेसन का फेस पैक बनाएं

हल्दी और बेसन दोनों ही एंटीसेप्टिक गुण रखते हुए त्वचा को गहराई से साफ करने में मदद कर सकते हैं।

लाभ के लिए थोड़ी-सी हल्दी और बेसन में गुलाबजल डालकर पतला घोल तैयार करें, फिर इसे पूरे फेस पर लगाकर सूखने दें, फिर सर्कुलर मोशन मे रगड़ते हुए फेस पैक को चेहरे से छुड़ा लें।

नियमित रूप से इसका इस्तेमाल करने से चेहरा निखर उठता हैं और त्वचा भी स्वस्थ रहती है।

सितंबर में होगी जूनियर विश्व कप निशानेबाजी

नई दिल्ली (ए)। भारत इस साल 24 सितंबर से 2 अक्टूबर तक जूनियर विश्व कप निशानेबाजी की मेजबानी करेगा। विश्व कप निशानेबाजी में राइफल, पिस्टल और शॉटगन की प्रतियोगितायें । यह हाल के दिनों में का तीसरा शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) का टूर्नामेंट होगा जो भारत में आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रीय महासंघ के अध्यक्ष कलिकेश नारायण सिंह देव ने कहा, ''पिछले महीने रोम में आईएसएसएफ की कार्यकारी समिति की एक सार्थक बैठक हुई थी और सभी सदस्य महासंघों के अलावा आईएसएसएफ अध्यक्ष लुसियानो रॉसी ने भारत की शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने और खेल को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में सहायता करने के तरीके की प्रशंसा की थी।''उन्होंने कहा, ''हमें तब इसकी उम्मीद थी पर अब जब मेजबानी मिलने की आधिकारिक पुष्टि हो गई है तो हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित हैं। '' वहीं भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा, ''आईएसएसएफ ने अपने पत्र में हमसे दो संभावित समय की पुष्टि करने का अनुरोध किया है जिसमें एक सितंबर-अक्टूबर में और दूसरा अक्टूबर के अंत तथा नवंबर की शुरुआत के दौरान है।

भारत के खिलाफ मैच से पहले पाकिस्तानी दिग्गज ने रोहित शर्मा की दिल खोलकर की तारीफ, बताया-क्लास प्लेयर

नईदिल्ली,(ए) । भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा वाइट बॉल क्रिकेट में जिस तरह बैटिंग कर रहे हैं और टीम इंडिया को जिस तरह विस्फोटक शुरुआत देते हैं उसने पूरी दुनिया को उनका मुरीद बना लिया है. पाकिस्तान के क्रिकेट फैंस और पूर्व क्रिकेटर भी रोहित शर्मा की तारीफ करते नहीं थकते हैं. 23 फरवरी को चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के दौरान भारत और पाकिस्तान का मैच होना है. इस मैच से पहले पाकिस्तानी दिग्गज ने रोहित की जमकर तारीफ की है. पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान और महान तेज गेंदबाज के रुप में शुमार वसीम अकरम ने भारत-पाकिस्तान मैच से पहले रोहित की जमकर तारीफ की है. उन्होंने कहा, रोहित शर्मा एक स्पेशल खिलाड़ी हैं और असाधारण हैं. उनकी बैटिंग बेहद सरल और आसान लगती है. वे अपने शॉट बिना किसी परेशानी के खेलते हैं. वो एक क्लास खिलाड़ी है।

वो हर मैच में शतक नहीं लगा सकते, विराट कोहली की फॉर्म पर ऑस्ट्रेलियाई दिग्गज का बड़ा बयान

नईदिल्ली, (ए)। दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली लंबे समय से उस तरह रन नहीं बना पा रहे हैं जिसके लिए उन्हें जाना जाता है. उनकी फॉर्म में निरंतरता का

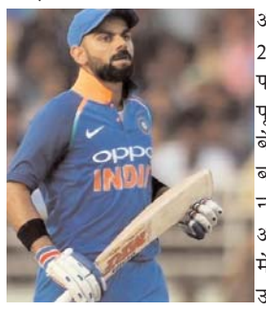

अभाव दिख रहा है. टी 20 विश्व कप 2024 के फाइनल को छोड़ दें तो पूरा टूर्नामेंट उनके लिए बेहद साधारण था. इसके बाद बांग्लादेश, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया टेस्ट सीरीज में भी उनका प्रदर्शन उनकी क्षमता के मुताबिक नहीं था. ऐसे में कई पूर्व क्रिकेटरों का मानना है कि उनका समय जा चुका है और वे जल्द संन्यास ले सकते हैं लेकिन दिग्गज ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर की राय इससे बिल्कुल अलग है.ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान स्टीव वॉ ने विराट कोहली को लेकर अहम बयान दिया है. एक निजी संस्था के कार्यक्रम में विराट कोहली से जुड़े सवाल पर स्टीव वॉ ने कहा कि, उनकी फॉर्म अहम है. वे लंबे समय से रन नहीं बना पा रहे हैं लेकिन उन्हें समाप्त लिखा जाना या खत्म मान लेना जल्दीबाजी होगी. वे जल्द ही फॉर्म में वापसी करते दिखेंगे. विराट ऑफ स्टंप के बाहर बैट करने की अपनी तकनीक में सुधार लाना होगा और उम्मीद है कि वे ऐसा जल्द करेंगे. स्टीव वॉ ने कहा कि, विराट ने अपने करियर के दौरान अपने लिए बहुत ही ऊंचा मानक स्थापित किया है।

पाकिस्तान के खिलाफ टीम इंडिया कर सकती है बड़ा बदलाव, प्लेइंग इलेवन में वरुण चक्रवर्ती की एंट्री से बढ़ेगी पड़ोसियों की मुश्किल

नईदिल्ली (ए)। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में अपने सफर का आगाज जीत के साथ किया. 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ हुए मैच में भारत ने 6 विकेट से जीत दर्ज की. टीम इंडिया का अगला अहम मैच 23 फरवरी को पाकिस्तान के साथ दुबई में होना है. इस मैच के लिए कप्तान रोहित शर्मा और कोच गंभीर एक बड़ा बदलाव कर सकते हैं. ये फैसला पाकिस्तान की मुश्किल को बढ़ा सकता है।

पाकिस्तान के खिलाफ मैच भारत के लिए बेहद अहम है. इस मैच में जीत के साथ टीम इंडिया चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंच सकती है. इसलिए मैच जीतने के लिए कप्तान रोहित और कोच गंभीर एक बड़ा फैसला कर सकते हैं और प्लेइंग इलेवन में वरुण चक्रवर्ती की एंट्री हो सकती है. वरुण ने टी 20 में बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर वनडे में जगह बनाई है।

जिस तरह का खेल उन्होंने टी 20 में दिखाया है अगर पाकिस्तान के खिलाफ उसे दोहराने में कामयाब रहे तो पाकिस्तान की मुश्किल बढ़नी तय हैं. पाकिस्तानी बल्लेबाजों को न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच में स्पिनर्स के खिलाफ संघर्ष करते देखा गया था. इस वजह से भी वरुण की प्लेइंग इलेवन में एंट्री की संभावना बढ़ गई है. सुनील गावस्कर ने भी वरुण को मौका देने की मांग की है।

वरुण अबतक सिर्फ 1 वनडे मैच खेल सके हैं जिसमें 1 विकेट उन्होंने लिया है लेकिन 18 टी 20 मैचों में उनके नाम 33 विकेट हैं. इस दौरान 2 बार वे 5 विकेट ले चुके हैं. पाकिस्तान के खिलाफ अगर उन्हें मौका मिलता है तो टीम इंडिया मैनेजमेंट और फैंस ऐसे ही प्रदर्शन की उम्मीद उनसे करेंगे।

वरुण चक्रवर्ती को टीम इंडिया प्लेइंग इलेवन में जगह मिलने की स्थिति में कुलदीप यादव को बाहर बैठना पड़ सकता है. कुलदीप ने इंजरी के बाद इंग्लैंड के खिलाफ वनडे सीरीज में वापसी की थी लेकिन साधारण रहे थे. बांग्लादेश के खिलाफ वे किफायती रहे थे और 10 ओवर में सिर्फ 43 रन दिए थे लेकिन उन्हें विकेट नहीं मिला था. ऐसे में उन्हें बाहर होना पड़ सकता है।

2026 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण जीतना है लक्ष्य : चित्रावेल

विजयनगर (ए)। एथलीट प्रवीण चित्रावेल का लक्ष्य अगले साल स्कॉटलैंड के ग्लास्गो में होने वाले 2026 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतना है। प्रवीण बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेल 2022 की त्रिकूद स्पर्धा में कांस्य से सिर्फ तीन सेंटीमीटर पीछे रहे थे। वह 16.89 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ इन खेलों में चौथे स्थान पर रहा था जबकि बरमूडा के जाह-एनहाई पेरिनचीफ ने 16.92 मीटर के प्रयास के साथ कांस्य पदक जीता था। एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता प्रवीण का लक्ष्य इस साल 17.37 मीटर के अपने निजी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और राष्ट्रीय रिकॉर्ड में सुधार करने का है जिससे वह ग्लास्गो 2026 राष्ट्रमंडल खेलों में पोडियम में शीर्ष स्थान हासिल कर सकें।

प्रवीण ने कहा, 'मैं अब भी और अधिक उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रयास कर रहा हूं, जैसे ओलंपिक, विश्व कप, विश्व चैंपियनशिप, एशियाई खेल, राष्ट्रमंडल खेल आदि। मैं एशियाई खेलों का पदक विजेता हूं, मैंने राष्ट्रमंडल खेलों में दो सेंटीमीटर (तीन सेंटीमीटर) से पदक खो दिया था। मैंने एशियाई इंडोर चैंपियनशिप का पदक, और युवा ओलंपिक का पदक जीता है।इस एथलीट ने कहा, 'मुझे भरोसा है कि मैं एशियाई खेल आइची-नागोया 2026 में पदक जीतूंगा पर मैं राष्ट्रमंडल खेलों 2026 में स्वर्ण पदक जीतना चाहता हूं, निश्चित रूप से राष्ट्रमंडल खेलों की वजह से मैं अब भी ठीक से सो नहीं सकता। राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन स्कॉटलैंड के ग्लास्गो में 23 जुलाई से दो अगस्त 2026 तक किया जाएगा जबकि आइची-नागोया 2026 एशियाई खेल जापान में 17 सितंबर से चार अक्टूबर क होंगे।

हाईवोल्टेज मुकाबले में भारत-पाकिस्तान होगें आमने-सामने

दुबई (ए)। दुबई के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में आज रविवार 23 फरवरी को भारत और पाकिस्तान के बीच चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का बहुप्रतीक्षित मुकाबला खेला जाएगा। दोनों देशों के बीच क्रिकेट मैच हमेशा से ही हाईवोल्टेज ड्रामा और रोमांच से भरे होते हैं, क्योंकि ये दोनों टीमें आमतौर पर केवल आईसीसी टूर्नामेंट और एशिया कप जैसी प्रतियोगिताओं में ही आमने-सामने होती हैं। इस बार मुकाबला एक तटस्थ स्थान, यानी दुबई में होगा, क्योंकि भारत ने सुरक्षा कारणों से पाकिस्तान में खेलने से इनकार कर दिया था।चैंपियंस ट्रॉफी का यह संस्करण पाकिस्तान द्वारा आयोजित किया जा रहा है, लेकिन भारत के सभी मैच दुबई में खेले जा रहे हैं। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली भारतीय टीम ने इस टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत शानदार अंदाज से किया था, जब उन्होंने बांग्लादेश को 6 विकेट से हराया। दूसरी ओर, पाकिस्तान को अपने घरेलू मैदान कराची में खेले गए पहले मुकाबले में न्यूजीलैंड से हार का सामना करना पड़ा था। इस मैच में न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान को 60 रनों से शिकस्त दी थी। अब दोनों चिर-प्रतिद्वंद्वी टीमें अपने सबसे बड़े मुकाबले के लिए तैयार हैं। एक दिवसीय क्रिकेट में ऐतिहासिक रूप से पाकिस्तान का पलड़ा भारत से भारी रहा है। अब तक दोनों देशों के बीच 135 वनडे मुकाबले खेले गए हैं, जिनमें पाकिस्तान ने 73 और भारत ने 57 मैच जीते हैं, जबकि पांच मुकाबले बेनतीजा रहे। हालांकि, पिछले डेढ़ दशक में भारत ने क्रिकेट के

हर क्षेत्र में जबरदस्त सुधार किया है और अब वह पाकिस्तान की तुलना में कहीं अधिक संतुलित और मजबूत टीम बन चुकी है। विशेष रूप से आईसीसी टूर्नामेंटों में भारत का रिकॉर्ड पाकिस्तान से काफी बेहतर रहा है। हालांकि, 2017 की चैंपियंस ट्रॉफी के फाइनल में पाकिस्तान ने भारत को हराकर ट्रॉफी जीती थी, लेकिन इसके बाद से भारत ने अपने पड़ोसी देश के खिलाफ बड़ी प्रतियोगिताओं में दबदबा बनाए रखा है।

इस मुकाबले में भारतीय टीम के लिए कप्तान रोहित शर्मा, उपकप्तान शुभमन गिल और विराट कोहली महत्वपूर्ण खिलाड़ी साबित हो सकते हैं, जबकि गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह की गैरहाजरी में मोहम्मद शमी पर बड़ी जिम्मेदारी होगी। वहीं, पाकिस्तान की बल्लेबाजी रिजवान और बाबर आज़म के प्रदर्शन पर निर्भर करेगी, फखर जमान के घायल होने से इमाम-उल-हक को टीम में लाया गया हैं। जबकि गेंदबाजी की बात करें तो शाहीन अफरीदी और नसीम शाह भारतीय बल्लेबाजों के लिए चुनौती बन सकते हैं। यह मुकाबला दोनों टीमों के लिए बेहद अहम होगा, क्योंकि चैंपियंस ट्रॉफी जैसे टूर्नामेंट में हर मैच महत्वपूर्ण होता है। क्रिकेट प्रेमियों की निगाहें इस हाईवोल्टेज भिड़ंत पर टिकी हैं, जहां हर गेंद और हर रन मायने रखेगा।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए टीमें

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, ऋषभ पंत, हार्दिक पांड्या, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, हर्षित राणा, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, रवींद्र जडेजा, वरुण चक्रवर्ती।

पाकिस्तान : मोहम्मद रिजवान (कप्तान), बाबर आजम, इमाम-उल-हक, कामरान गुलाम, सऊद शकील, तैयब ताहिर, फहीम अशरफ, खुशदिल शाह, सलमान अली आगा, उस्मान खान, अबरार अहमद, हारिस रऊफ, मोहम्मद हसनैन, नसीम शाह, शाहीन शाह अफरीदी।

विराट कोहली नहीं रोहित शर्मा पाकिस्तान को पहुंचा सकते हैं बड़ा नुकसान, पड़ोसियों के खिलाफ खतरनाक है हिटमैन का रिकॉर्ड

नईदिल्ली(ए) । भारत और पाकिस्तान के बीच 23 फरवरी को चैंपियंस ट्रॉफी के दौरान एक दमदार मुकाबला खेला जाने वाला है. दुबई में होने वाले इस मैच से ही चैंपियंस ट्रॉफी का रोमांच बढ़ने की उम्मीद है. भारत ने अपना पहला मैच बांग्लादेश के खिलाफ 6 विकेट से जीता था जबकि पाकिस्तान को अपने पहले मैच में न्यूजीलैंड के खिलाफ 60 रन से हार का सामना करना पड़ा था. पाकिस्तान जीत के लिए बेताब है और इसके लिए टीम इंडिया के खिलाड़ियों के खिलाफ रणनीति तैयार करने में जुटा है. इन खिलाड़ियों में पहला नाम विराट कोहली का है लेकिन पाकिस्तान को सबसे बड़ा नुकसान भारतीय कप्तान रोहित शर्मा पहुंचा सकते हैं।

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा पिछले कुछ समय से वाइट बॉल क्रिकेट में ऐसी बल्लेबाजी कर रहे हैं जिसकी तारीफ हर जगह हो रही है. रोहित पारी की तेज शुरुआत करते हैं और पहले पावर प्ले के दौरान ही भारत की स्थिति मजबूत कर देते हैं. पहले 10 ओवर में रोहित की बैटिंग की वजह से भारत विपक्षी टीम से काफी आगे हो जाता है. पाकिस्तान के शाहीन अफरीदी और हारिस रऊफ जैसे गेंदबाज पिछले मैच में फॉर्म में नहीं दिखे थे. ऐसे में रोहित उनके लिए बड़ा खतरा बन सकते हैं. रोहित अगर पावर प्ले खेल गए तो ये निश्चित है कि मैच पाकिस्तान के हाथ से निकल जाएगा।

विदेश समाचार

सलमान रुश्दी पर चाकू से हमले का मामला : कौन है हादी मतार? जिसे अदालत ने ठहराया दोषी

न्यूयॉर्कन (आरएनएस)। न्यूयॉर्क के एक व्याख्यान मंच पर मशहूर ब्रिटिश-भारतीय लेखक सलमान रुश्दी पर कई बार चाकू से हमला करने वाले न्यूजर्सी के एक शख्स को हत्या के प्रयास और हमले का दोषी ठहराया गया।मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 27 वर्षीय हादी मतार को अब 30 वर्ष से अधिक जेल की सजा का सामना करना पड़ सकता है। अगस्त 2022 में हुए हमले में रुश्दी को गंभीर चोटें आई थीं। उनके लीवर को नुकसान पहुंचा, एक आंख की रोशनी जाती रही उनका हाथ लकवाग्रस्त हो गया क्योंकि हाथ की तंत्रिका को नुकसान पहुंचा था।

जूरी ने शुक्रवार को हमले की जगह के पास पश्चिमी न्यूयॉर्क राज्य के चौटाउक्वा काउंटी कोर्ट में दो सप्ताह की सुनवाई के बाद मतार को दोषी करार दिया।जूरी ने मतार को साक्षात्कारकर्ता हेनरी रीस पर भई हमले का भी दोषी पाया। वह लेखक के साथ मंच पर मौजूद थे। हमले के दौरान रीस के सिर में मामूली चोट लगी थी।मतार की सजा की तारीख 23 अप्रैल तय की गई है। 77 वर्षीय रुश्दी ने गवाही दी कि वह ऐतिहासिक चौटाउक्वा इंस्टीट्यूशन में मंच पर थे, जब उन्होंने एक व्यक्ति को अपनी ओर भागते हुए देखा।

घटना को याद करते हुए उन्होंने कहा कि हमलावर की आंखें देखकर वह दंग रह गए, जो काली थीं और बहुत क्रूर लग रही थीं। पहले तो उन्हंने सोचा कि उसे मुक्का मारा गया है, लेकिन बाद में एहसास हुआ कि उन्हें चाकू मारा गया है - कुल 15 बार - और उनकी आंख, गाल, गर्दन, छाती, धड़ और जांघ पर घाव हुए थे।यह हमला रुश्दी के विवादास्पद उपन्यास, द सैटेनिक वर्सेज के पहली बार प्रकाशित होने के 35 साल से भी ज़्यादा समय बाद हुआ था।पैगंबर मुहम्मद के जीवन से प्रेरित इस उपन्यास ने कुछ मुसलमानों में आक्रोश पैदा कर दिया था, जिन्होंने इसके कंटेंट को ईशनिंदा वाला माना था। 1988 में प्रकाशित होने के बाद इस किताब पर कुछ देशों में प्रतिबंध लगा दिया गया था।

रुश्दी को अनगिनत मौत की धमकियों का सामना करना पड़ा।

द सैटेनिक वर्सेज से जुड़े विवाद ने भूराजनीति पर उल्लेखनीय प्रभाव तब पड़ा। 1989 में ईरान के सर्वोच्च नेता रूहोल्लाह खुमैनी ने मुसलमानों को रुश्दी को मारने का आदेश देते हुए एक फतवा जारी किया। इसके बाद रुश्दी को वर्षों तक भूमिगत रहना पड़ा था। हालांकि बाद के वर्षों में ईरान का इस फतवे को लेकर रुख बदलता रहा।

हाल के वर्षों में, लेखक ने कहा कि उनका मानना है कि उनके खिलाफ धमकियां कम हो गई हैं।

2022 में जेल से न्यूयॉर्क पोस्ट को दिए गए एक इंटरव्यू में, मतार ने ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला खुमैनी की रुश्दी की मौत का आह्वान करने के लिए तारीफ की।लेखक के बारे में उसने कहा, मुझे नहीं लगता कि वह बहुत अच्छे व्यक्ति हैं।

वह ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इस्लाम पर हमला किया है।मतार ने यह भी कहा कि द सैटेनिक वर्सेज के केवल कुछ ही पृष्ठ पढ़े हैं।लेबनानी माता-पिता के घर न्यू जर्सी के फेयरव्यू में जन्मे मतार पर लेबनान स्थित आतंकवादी समूह हिजबुल्लाह की मदद करने के लिए एक अलग संघीय मामले में भी आरोप लगाया गया है। हिजबुल्लाह को पश्चिमी देशों, इजरायल, खाड़ी अरब देशों और अरब लीग ने आतंकवादी संगठन घोषित किया हुआ है।

डोनाल्ड ट्रंप की धमकी, 'भारत हो या चीन... किसी को भी नहीं छोड़ेंगे, सभी पर लगाएंगे टैरिफ

वाशिंगटन (आरएनएस)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि अमेरिका जल्द ही भारत, चीन और अन्य देशों पर रिसिप्रोकल टैरिफ लगाने

की योजना बना रहा है। ट्रंप का कहना है कि अमेरिका उन देशों द्वारा अमेरिकी वस्तुओं पर लगाए गए शुल्क के बराबर शुल्क लगाएगा, जिससे निष्पक्षता बनी रहे। हाल ही में पीएम मोदी की अमेरिका दौरे के दौरान व्यापार, रक्षा और टैरिफ से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई थी।

ट्रंप ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, हम जल्द ही रिसिप्रोकल टैरिफ का एलान करेंगे। वे हम पर जो शुल्क लगाते हैं, हम भी उन्हीं पर शुल्क लगाएंगे। उन्होंने आगे बताया कि कोविड-19 महामारी से पूर्व भी इस कदम को उठाने की इच्छा रही थी। पीएम मोदी के साथ वाशिंगटन में द्विपक्षीय बैठक से पहले, ट्रंप ने भारत की टैरिफ नीति पर कड़ी टिपण्णी की। उनके अनुसार, भारत में अत्यधिक टैरिफ के कारण व्यापार करना बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया है, जिस कारण कई बार उन्होंने भारत को टैरिफ किंग का भी उपनाम दिया है। एक अन्य प्रेस कॉन्फ्रेंस में टेस्ला के सीईओ एलन मस्क के साथ पीएम मोदी की मुलाकात पर टिप्पणी करते हुए ट्रंप ने कहा कि हालाँकि भारतीय बाजार में व्यापार के अवसर मौजूद हैं, लेकिन भारी टैरिफ की वजह से अमेरिकी कंपनियों को विदेश में विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने पर मजबूर होना पड़ता है।

एफबीआई प्रमुख काश पटेल ने गीता पर हाथ रखकर ली शपथ

वॉशिंगटन(ए)। भारतीय मूल के कश्यप प्रमोद पटेल (काश पटेल) ने शनिवार को भगवद गीता पर हाथ रखकर अमेरिका की जांच एजेंसी एफबीआई के डायरेक्टर के रूप में शपथ ली। वह इस जांच एजेंसी के प्रमुख के रूप में नियुक्त होने वाले नौवें व्यक्ति हैं। शपथ ग्रहण समारोह वाशिंगटन में व्हाइट हाउस परिसर में आइजनहावर एक्जीक्यूटिव ऑफिस बिल्डिंग के भारतीय संधि कक्ष में हुआ। अमेरिकी अटॉर्नी जनरल पैम बोंडी ने इसे आयोजित किया था। पटेल की नियुक्ति को गुरुवार को सीनेट ने 51-49 के वोट से मंजूरी दी। दो रिपब्लिकन सीनेटर, सुज़ैन कॉलिंस (मेन) और लीसा मर्कोव्स्की (अलास्का) ने डेमोक्रेट्स के साथ मिलकर उनकी नियुक्ति का विरोध किया।

राष्ट्रपति ट्रंप ने पटेल की नियुक्ति की सराहना की और एफबीआई एजेंट्स में उनके बीच सम्मान का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वह इस पद पर सबसे बेहतरीन साबित होंगे। वह बहुत मजबूत और कठोर व्यक्ति हैं। उनके पास अपने विचार हैं। ट्रे गोवडी ने एक शानदार बयान दिया था और कहा कि काश एक असाधारण व्यक्ति हैं और लोग इसे समझते नहीं हैं। जब उन्होंने यह कहा तो कोई संदेह नहीं रहा। यह एक बड़ा बयान था, जिसे एक सम्मानित और मध्यम विचार वाले व्यक्ति ने दिया। ट्रंप ने कहा, मैं काश को पसंद करता हूं और उन्हें इस पद पर नियुक्त करना चाहता था क्योंकि एफबीआई के एजेंट्स उनके प्रति सम्मान रखते थे।

हमास ने दो बंधकों को किया रिहा, इजरायल 602 कैदियों को करेगा आजाद

यरूशलम ,(ए.)। फिलिस्तीनी ग्रुप हमास ने शनिवार को गाजा युद्धविराम समझौते के तहत दो बंधकों - ताल शोहम और एवेरा मेंगिस्टू को रेड क्रॉस को सौंप दिया। आईडीएफ ने दोनों के इजरायल पहुंचने की पुष्टि कर दी है।हमास की ओर से जारी किए गए एक वीडियो में शोहम और मेंगिस्टू को राफा में हमास के वाहनों से बाहर निकलते हुए दिखाया गया। दोनों स्पष्ट रूप से कमजोर दिखाई दे रहे हैं।आईडीएफ ने एक्स पर पोस्ट किया, 3,812 दिनों के बाद एवेरा और 504 दिनों के बाद ताल घर आ गए।चार और इजरायली बंधकों को भी 22 फरवरी को ही रिहा किया जाना है। इजरायल आज 602 फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करने जा रहा है। बता दें इजरायल और हमास के बीच युद्ध विराम समझौते का पहला चरण 19 जनवरी को लागू हुआ था। इससे पहले हमास की सशस्त्र शाखा अल-कस्साम ब्रिगेड ने इजरायली बंधक शिरी बिबास का शव अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस समिति (आईसीआरसी) को सौंप दिया।

मृत्यु हुई नहीं और पहले ही बना डाली पोप फ्रांसिस के लिए कब्र

रोम, ,(ए.)। कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप फ्रांसिस इस समय अस्पताल में भर्ती हैं। उनका उपचार चल रहा है लेकिन इधर उनके अंतिम संस्कार की तैयारियां भी हो रही है। इसके लिए स्विस गार्ड ने रिहर्सल तक कर ली है। पोप ने पहले खुलासा किया था कि उन्होंने अपनी कब्र 'पहले ही तैयार कर ली है'। लेकिन उनकी कब्र और ताबूत का स्थान परंपरा से अलग होगा। वहीं खबर आई थी कि 88 वर्षीय पोप की सुरक्षा करने वाले स्विस गार्ड उनके अंतिम संस्कार की रिहर्सल कर रहे हैं। इसके सदस्यों को कर्फ्यू के तहत रखा गया है, क्योंकि वे 'पोंटिफ की मृत्यु की तैयारी' कर रहे हैं।पोप फ्रांसिस अर्जेंटीना के एक जेसुइट पादरी हैं, वो 2013 में रोमन कैथोलिक चर्च के 266वें पोप बने थे। उन्हें पोप बेनेडिक्ट सोलहवें का उत्तराधिकारी चुना गया था। पोप फ्रांसिस बीते 1000 साल में पहले ऐसे इंसान हैं जो गैर-यूरोपीय होते हुए भी कैथोलिक धर्म के सर्वोच्च पद पर पहुंचे।

वहीं अब पोप फ्रांसिस की हालत को लेकर डॉक्टर ने बड़ा अपडेट दिया है।

चीन से बढ़ते खतरों के बीच ताइवान अपनी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध : उपराष्ट्रपति

ताइपे ,(ए.)। ताइवान की राजधानी ताइपे में हैलिफैक्स इंटरनेशनल सिक्योरिटी फोरम 2025 के समापन समारोह में उपराष्ट्रपति हिसियाओ बि-खिम ने कहा कि ताइवान अपनी आत्मरक्षा के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। उन्होंने अपने सहयोगियों और समान विचारधारा वाले देशों से वैश्विक शांति और समृद्धि बनाए रखने की अपील की।

उन्होंने कहा, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए ताइवान बहुत महत्वपूर्ण है। शुक्रवार को अपने भाषण में हिसियाओ ने ताइवान के हवाई क्षेत्र में चीन की लगातार घुसपैठ और ताइवान पर हो रहे साइबर हमलों का जिक्र किया। ताइवान के प्रमुख समाचार पत्र ताइपे टाइम्स के अनुसार, उन्होंने कहा कि ताइवान ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी सेना से होने वाले खतरों का सामना करने के लिए एक खास तरीका अपनाया है। गुरुवार को राष्ट्रपति लाई चिंग-ते ने 2025 हैलीफ़ैक्स ताइपे फ़ोरम के उद्घाटन में हिस्सा लिया।

एक्शन में ट्रंप : ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन को हटाया, देश में हो सकता है कड़ा विरोध

वाशिंगटन (आरएनएस)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने जब से पद संभाला है तब से वो एक्शन मोड में है। कभी थर्ड जेंडर को खत्म करना तो कभी मेक्सिको बोर्डर पर इमरजेंसी घोषित करना, ट्रंप लगातार सख्त कदम उठा रहे हैं। इस बीच अमेरिकी राष्ट्रपति ने शुक्रवार अचानक वायुसेना के जनरल सीक्यू ब्राउन को ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन पद से हटा दिया। उन्होंने इतिहास रचने वाले फाइटर पायलट और सम्मानित अधिकारी को दरकिनार कर दिया। दरअसल, ट्रंप उन सभी अधिकारियों को हटा रहे हैं जो सेना में विविधता और समानता का समर्थन कर रहे हैं।

चेयरमैन के रूप में सेवा करने वाले दूसरे अश्वेत जनरल ब्राउन को हटाए जाने से पेंटागन में जहां हड़कंप मचेगा, वहीं देश में भी विरोध हो सकता है। इस पद पर रहते हुए उन्होंने 16 महीने यूक्रेन में युद्ध और मध्य पूर्व में संघर्ष में बिताए। ट्रंप ने आगे कहा कि हम वे वायु सेना के लेफ्टिनेंट जनरल डैन राजिन कैन को अगले अध्यक्ष के रूप में नामित कर रहे हैं। कैन एक कैरियर एफ-16 पायलट हैं, जिन्होंने सक्रिय ड्यूटी और नेशनल गार्ड में काम किया है और हाल ही में सीआईए में सैन्य मामलों के एसोसिएट डायरेक्टर के रूप में काम किया था।

बता दें कि ब्राउन ने अवैध आव्रजन का मुकाबला करने के ट्रंप के कार्यकारी आदेश को पूरा करने के लिए सेना के तेजी से बढ़ते बलों का आकलन करते हुए यूएस-मैक्सिको सीमा पर दिन बिताया था। कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों के बीच ब्राउन के लिए समर्थन और दिसंबर के मध्य में उनके साथ एक दोस्ताना बैठक के बावजूद ट्रंप ने यह कदम उठाया, जब दोनों सेना-नौसेना फुटबॉल खेल में एक-दूसरे के बगल में बैठे थे।

घरेलू गैस सिलेंडर के व्यावसायिक उपयोग करने पर छापामार कार्रवाई करते हुए जब्त किए गए 05 घरेलू गैस सिलेंडर

सीहोर, (निप्र)। कलेक्टर बालागुरू के. के निर्देशानुसार घरेलू गैस सिलेंडरों के व्यावसायिक उपयोग को रोकने के लिए खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा जिले के विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों, होटलों एवं प्रतिष्ठानों पर छापामार कार्रवाई की जा रही है।

कार्रवाई में घरेलू गैस सिलेंडरों का व्यवसाय के लिए उपयोग करने वाली दुकानों एवं संस्थानों की जांच कर उपयोग किए जा रहे घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए जा रहे हैं एवं कार्रवाई की जा रही है। कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी आकाश चंदेल ने बताया कि जांच के दौरान कुबेरेश्वर धाम स्थित 04 दुकानों एवं प्रतिष्ठानों का औचक निरीक्षण कर कार्रवाई करते हुए 05 घरेलू गैस सिलेंडर जब्त किए गए। यह कार्रवाई कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी आकाश चंदेल एवं खाद्य विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों द्वारा की गई।

प्रत्येक मंगलवार को जिले में विकासखंड एवं पंचायत स्तर पर आयोजित होगी जनसुनवाई

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के ने सभी एसडीएम को प्रत्येक मंगलवार को जिले में विकासखंड एवं ग्राम पंचायत स्तर पर जनसुनवाई आयोजित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने खंड स्तर पर आयोजित होने वाली जनसुनवाई के दौरान सभी एसडीएम एवं खंड स्तरीय अधिकारियों को कार्यालय में उपस्थित रहने एवं आवेदन तथा शिकायतों का निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर श्री बालागुरू के द्वारा जारी निर्देशानुसार ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित जनसुनवाई में संबंधित हल्का पटवारी, ग्राम पंचायत सचिव और रोजगार सहायक पंचायत मुख्यालय पर उपस्थित रहकर आमजनों के आवेदनों एवं शिकायतों का निराकरण करेंगे।

नपाध्यक्ष प्रिंस राठौर और सीएमओ ने किया काहिरी डेम और भगवानपुरा जलाशय का निरीक्षण

आरक्षित जलाशयों का पानी चोरी करने वालो पर की जाएगी एफआईआर दर्ज

सीहोर(निप्र)। शहर में जल वितरण व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए शनिवार को शहर के पेयजल के लिए सुरक्षित प्रमुख जल स्त्रोतों काहिरी बंधान पर नगरपालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर ने पहुंचकर जल प्रदाय व्यवस्था का निरीक्षण किया। पेयजल स्त्रोतों से आरक्षित पानी लगातार चोरी हो रहा है। नदी, नालों और डैमों में बड़ी-बड़ी पानी की मोटर डाल कर पानी की चोरी की जा रही है। यदि इसी रफ्तार से पानी चोरी होती रही तो आने वाले दिनों में शहर के लिए आरक्षित पानी भी खत्म हो जाएगा। भीषण गर्मी के दौर में जलसंकट गहराने के हालात बन सकते हैं। इन शिकायतों को लेकर नपा सीएमओ भूपेन्द्र दीक्षित ने आरक्षित जलाशयों से पानी का दुरुपयोग करने वालों के खिलाफ प्रकरण दर्ज करने के साथ-साथ जलाशयों के निरीक्षण से नावों से कर्मचारियों को तैनात कर निरीक्षण करने के निर्देश दिए है। पूर्व में भी कार्रवाई कर पाइप जब्त कर नगरपालिका की सुपुर्दगी में दिए थे।

जानकारी के अुनसार बीते साल जिले में सामान्य से कम वर्षा रही, आगामी गर्मियों में जल संकट की स्थिति न बने इसलिए पानी सहेजना जिला प्रशासन की जिम्मेदारी हो जाती है, लेकिन बीते कुछ महिनों से जल स्त्रोतों में से बड़ी मात्रा में पानी चोरी हो रहा है और इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं। ऐसे में प्रशासन की अनदेखी कहीं गर्मियों में सीहोर शहर में जल संकट खडा न कर दे। देखने में यह आ रहा है कि बीते कुछ माहिनों से शहर की प्यास बुझाने वाले काहिरी बंधान और जमोनिया तालाब से बड़ी मात्रा में पानी चोरी हो रहा है। कई तालाब में मोटर और पाईप डालकर रोजाना पानी चोरी किए जा रहे हैं। जमोनिया डेम में अनेकों किसानों पाईन लाईन और बिजली तार बिछा रखे हैं यह किसान बड़ी मात्रा में तालाब से पानी चोरी कर रहे हैं।

सीहोर नगर में जमोनिया तालाब द्वारा कई वार्डों में पीने और इस्तेमाल का पानी प्रदाय किया जाता है। जल आपूर्ति के लिए काहिरी और जमोनिया तालाब पर सीहोर नगर निर्भर है और नगरवासियों को सुचारु रूप से पानी मिले इसलिए शहरवासियों के पीने के लिए यह संरक्षित कर दिया है, इसके बाद यह पानी किसानों को नहीं दिया जाता, लेकिन जलाशयों में से कई किसान पानी चोरी किए जा रहे हैं, भगवानपुरा, जमोनिया जलाशयों से अनेक स्थानों से पानी चोरी हो रहा है। जबकि यहीं हाल काहिरी बंधान के भी हैं। शनिवार को निरीक्षण के दौरान नपाध्यक्ष श्री राठौर ने सीएमओ से चर्चा कर टीम गठित करने की बात कही है। इस मौके पर जलसभापति संतोष शाक्य, सहायक इंजीनियर विजय कोली, मांगीलाल मालवीय और लोकेन्द्र वर्मा आदि पार्षद और नपा का आमला साथ था।

प्रधानमंत्री 24 फरवरी को अंतरित करेंगे किसान सम्मान निधि योजना की 19वीं किस्त

सीहोर(निप्र)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 24 फरवरी को बिहार के भागलपुर में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 19वी किस्त किसानों के खाते में अंतरित करेंगे। इस दिवस को किसान सम्मान समारोह दिवस के रूप में मनाया जाएगा। इस अवसर पर जिले में जिला, ब्लॉक एवं पंचायत स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रमों में स्थानीय जनप्रतिनिधि, किसान एवं गणमान्य नागरिक शामिल होंगे। इस अवसर प्रधानमंत्री के मुख्य कार्यक्रम का लाइव प्रसारण दिखाया जाएगा। इस अवसर पर ग्रामों में नियुक्त किए गए विलेज नोडल ऑफिसरों द्वारा हितग्राहियों को किश्त के लिए ई-केवायसी, आधार एवं बैंक खाता लिंकिंग एवं पीएमकिसान पोर्टल पर स्टेटस अवलोकन करने संबंधी जानकारी प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम में आम नागरिक वीडियो कॉन्फ्रेंस लिक https://pmindiaweb-cast.nic.in के माध्यम से जुड़ सकते हैं। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत वर्ष में कुल 06 हजार रूपये की राशि किसानों को तीन समान किस्तों में प्रदान की जाती है।

जिला स्तरीय पत्रकार सम्मेलन का आयोजन, किया सम्मान

सीहोर, (निप्र)। जिला प्रेस क्लब के तत्वाधान में जिला स्तरीय पत्रकार सम्मान कार्यक्रम का आयोजन क्रिसेंट रिसोर्ट में किया गया। इसमें प्रेस क्लब के जिलाध्यक्ष पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष राकेश राय के अलावा जिला स्तरीय पदाधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम का उद्देश्य जिला स्तरीय पत्रकार सम्मेलन एवं वरिष्ठों का सम्मान किया जाना था। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि यदि जिले के किसी भी पत्रकार साथी पर कोई संकट आता है या उसे प्रताड़ित किया जाता है तो मैं आधी रात को भी उसके साथ खड़ा मिलूंगा। पत्रकारों को भी एकजुट रहना चाहिए। पत्रकारों को समाज का दर्पण बताते हुए उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि पत्रकार ईमानदारी से जनता की समस्याओं को उजागर कर सरकार और समाज के बीच सेतु का काम करते हैं। वहीं इस मौके पर जिलाध्यक्ष श्री राय ने कहा कि चारों विधानसभा क्षेत्र में जो भी पत्रकार अच्छा कार्य करता है उसको सम्मान के साथ श्रद्धा निधि भी भेंट करने की घोषणा मंच से की। कार्यक्रम के दौरान जिलाध्यक्ष श्री राय का जिले के सभी पत्रकारों ने पुष्प मालों के साथ सम्मान किया।

इस अवसर पर प्रेस क्लब के महासचिव वरिष्ठ पत्रकार रघुवरदयाल गोहिया, वरिष्ठ पत्रकार रामनारायण ताम्रकार ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सभी अतिथियों का साफा, प्रमाण पत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित किया गया।शनिवार को आयोजित जिला स्तरीय पत्रकार सम्मेलन में पूरे जिले से आए सभी पत्रकारों से परिचय हुआ। इस मौके पर प्रेस क्लब के सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार महेन्द्र सिंह ठाकुर मनकी ने सभी पत्रकारों से रूबरू होते हुए अपनी ओर से हर संभव सहयोग की बात की। बैठक में पत्रकारों की विभिन्न समस्याओं व उनके समाधान पर चर्चा की गई। साथ ही पत्रकारों का जिले के सभी ब्लाकों में सम्मेलन आयोजित करने पर भी विचार कर सम्मेलन की रूपरेखा बनाई गई। इस मौके पर मंच पर वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप समाधिया, एआर शेख मुंशी, जुगल पटेल, योगेश उपाध्याय, शैलेश तिवारी, अखिलेश गुप्ता, धमेन्द्र यादव, जयंत दासवानी, संतोष सिंह आदि शामिल थे। कार्यक्रम का सफल संचालक क्लब के मीडिया प्रभारी मनोज दीक्षित मामा ने किया।

इछावर विधानसभा स्तरीय बसपा की बैठक सम्पन्न

सीहोर(निप्र)। इछावर विधानसभा स्तरीय बैठक शनिवार, 22 फरवरी को बहुजन समाज पार्टी की स्थानीय रविदास धर्मशाला इछावर में आयोजित की गई। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एन.पी. सागर (जिला प्रभारी बसपा एवं विस प्रभार इछावर), विशिष्ट अतिथि जिलाध्यक्ष संजीव बौद्ध रहे। अध्यक्षता गेंदालाल सूर्यवंशी (विस अध्यक्ष बसपा इछावर) ने की। इस अवसर पर प्रमुख रूप से नंद किशोर दसलानिया उपापध्यक्ष इछावर विधानसभा उपाध्यक्ष, देकबगस बामनिया महासचिव, चैन सिंह सचिव, राजू बामनिया, हरि बामनिया, रोहित कुमार बौध, राजमल सिलोरिया, शिव चरण, देव नारायण, जय सिंह, महेश मेचंद सहित बड़ी संख्या में बसपा कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने जीआईएस समिट में युवाओं से शामिल होने का किया आग्रह

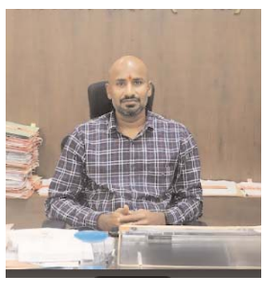

सीहोर, (निप्र)। कलेक्टर बालागुरू के. ने बताया कि भोपाल में 24 एवं 25 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर समिट (जीआईएस) आयोजित किया जा रहा है। ग्लोबल इन्वेस्टर समिट का उद्देश्य प्रदेश का तेजी से औद्योगिक विकास करना है तथा युवाओं को रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराना है। जिले के जिन युवाओं ने इस समिट के लिए पंजीयन कराया है, उन सभी युवाओं से कलेक्टर बालागुरू के. ने ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में शामिल होकर इस अवसर का लाभ उठाने और जिले के औद्योगिक परिदृश्य को बदलने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि सीहोर जिला प्रशासन द्वारा सूक्ष्म, लघु तथा वृहद उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए लैंड बैंक बनाया गया है तथा उद्यम लगाने की प्रक्रिया को आसान बनाया गया है।

शासकीय ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा अब 23 मार्च को होगी

सीहोर, (निप्र)। अनुसूचित जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित शासकीय ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय भोपाल में शैक्षणिक सत्र 2025-26 में कक्षा छठवीं में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा 23 मार्च 2025 को प्रातः 10 बजे 01 बजे तक सीहोर के इंदौर भोपाल रोड स्थित कन्या शिक्षा परिसर में आयोजित की जाएगी। पहले यह परीक्षा 02 मार्च को आयोजित होना थी जो अब 23 मार्च को आयोजित की जाएगी। सीहोर जिले के विद्यार्थियों का परीक्षा केन्द्र कन्या शिक्षा परिसर निर्धारित किया गया है।

कुबेरेश्वर धाम सीहोर में 25 फरवरी से आयोजित होने वाली शिव महापुराण कथा के चलते हल्के एवं भारी वाहनों के लिए मार्ग परिवर्तित

24 फरवरी प्रात: 06 बजे होगा मार्ग परिवर्तित

सीहोर(निप्र)। कुबेरेश्वर धाम में 25 फरवरी से शिव महापुराण कथा का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा एवं यातायात सुगम बनाए रखने के लिए मार्गों का डायवर्सन किया गया है। शिव महापुराण कथा 03 मार्च तक चलेगी। इस आयोजन में लाखों श्रद्धालु कुबेरेश्वर धाम पहुंचेंगे।

शिवमहापुराण कथा में प्रतिदिन लाखों श्रद्धालुओं का मध्यप्रदेश सहित अन्य राज्यों से सड़क मार्ग द्वारा आवागमन होगा। इस दौरान यातायात सुगम बनाए रखने के लिए भोपाल से इंदौर और इंदौर से भोपाल आने जाने वाले वाहनो के मार्ग में 24 फरवरी को प्रात: 06 बजे

से परिवर्तन किया गया है।

भारी वाहनों के लिए मार्ग परिवर्तन

भोपाल से इंदौर जाने वाले भारी वाहन भोपाल से श्यामपुर, ब्यावरा होते हुये इंदौर (तूमडा दोराहा जोड़ होते हुये) जा सकेंगें। इसी प्रकार इंदौर से भोपाल जाने वाले भारी वाहन देवास से ब्यावरा, श्यामपुर होते हुये भोपाल जा सकेंगे ।

हल्के वाहनों एवं यात्री बसों के लिए मार्ग परिवर्तन

भोपाल से सीधे आष्टा, देवास इंदौर जाने वाले सभी छोटे वाहन एवं यात्री बस सीहोर स्थित क्रिसेंट चौराहा से भाऊखेड़ी जोड़ एवं अमलाहा होते हुए इंदौर को ओर जायेगें। इसी प्रकार इंदौर से भोपाल सीहोर आने वाले वाहन अमलाहा से भाऊखेड़ी जोड़ एवं क्रिसेंट चौराहा होते हुए सीहोर, भोपाल जा सकेंगे। केवल कुबेरेश्वर धाम जाने वाले वाहन ही सीधे हाईवे से जा सकेंगे।

अन्य सभी वाहनों को डायवर्सन मार्ग से ही संचालित किया जाएगा।

म प्र के वृद्ध पैंशनरो को अतिरिक्त महंगाई भत्ता देने हेतु मुख्यमंत्री का आभार जताया

सीहोर (निप्र)। मप्र शासकीय अधिकारी कर्मचारी जनकल्याण संघ के प्रांताध्यक्ष रामगोपाल सेन ने फैक्स संदेश भेजकर मुख्यमंत्री मोहन यादव का आभार व्यक्त किया है जिन्होंने मप्रके के पैशनरो 80से100 वर्ष पूर्ण होने पर कृमश बीस प्रतिशत से लेकर सो प्रतिशत तक अतिरिक्त महंगाई भत्ता निर्धारित आयु पूर्ण होने के अगले माह से उपरोक्त अतिरिक्त महंगाई भत्ता देने के आदेश प्रदान किए हे संगठन के प्रांताध्यक्ष रामगोपाल सेन ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि 21 फरवरी 2025को वित्त विभाग के जारी आदेश में आयुवार पैशनरो को प्रथक प्रथक दर से महंगाई भत्ता देने का उल्लेख किया है जिसमें उम्र 80से85बीस प्रतिशत/ 85से90तीस प्रतिशत 90से95चालीसप्रतिशत/ 95से100पचास प्रतिशत तथा सो वर्ष से ऊपर के पैशनरो को शत-प्रतिशत महंगा भत्ता देने के आदेश प्रदान किए हैं ।

मप्र शासकीय अधिकारी कर्मचारी जनकल्याण संघ के प्रांताध्यक्ष रामगोपाल सेन ने ने बताया की शासन के पास 70वर्ष से ऊपर के पैशनरो को अतिरिक्त महंगाई भत्ता देने का प्रस्ताव लंबित जिसे शासन ने दस वर्ष बढ़ाकर आदेश जारी करायें है

जिसपर पुनर्विचार करने की कर्मचारी नेता रामगोपाल सेन ने 70वर्ष के ऊपर के सभी वरिष्ठ पैंशनरो को अतिरिक्त महंगाई भत्ता देने की मांग की है जिसमें संगठन के पदाधिकारियों में बीएम सिंह सिसौदिया/सिद्धू सिस ठाकुर/बीएस दैवडा/व्ही के सिंह/सुनील भार्गव/आलोक शर्मा/आर आर उइके/व्ही पी परिहार/पीएन मालवीय/जीएल बशिष्ठ/आर एन मालवीय/दीपक यादव/संतोष श्रीवास्तव/शंकर लाल शर्मा/जितेन्द्र मालवीय/बलराम सिसोदिया/बहादुर सिंह परमार/मुकेश सेन सहित प्रांताध्यक्ष रामगोपाल सेन प्रमुख हैं जिन्होंने अतिरिक्त महंगाई भत्ता सत्तर वर्ष से ऊपर के सभी वरिष्ठ पैंशनरो को देने की मांग की है।

कथावाचक पं. हरिप्रसाद शर्मा का निधन

सीहोर(निप्र)। ग्राम खारपा निवासी पं. मोहनलाल शर्मा के बड़े भाई व पं. संतोष शर्मा के पिताजी क्षेत्र के प्रसिद्ध कथावाचक वरिष्ठ समाजसेवी पंडित हरिप्रसाद शर्मा का शनिवार को आकस्मिक निधन हो गया। श्री शर्मा धार्मिक मृदु भाषी एवं मिलनसार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वह अपना भरा पूरा परिवार छोडक़र चले गए। ग्राम खारपा स्थित श्मशान घाट पर उनके परिजनों ने उन्हें अंतिम मुखाग्नि दी। क्षेत्र के सांस्कृतिक सामाजिक एवं ग्रामीणजनों ने पंडित शर्मा के आकस्मिक निधन पर शोक संवेदना व्यक्त कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

बीएसआई मैदान पर कारपोरेट चैम्पियनशिप

सीहोर, (निप्र)। शहर के वरिष्ठ क्रिकेटर स्व. संतोष पांडे कप्तान की स्मृति में शहर के बीएसआई मैदान पर कारपोरेट चैम्पियनशिप का आयोजन किया जा रहा। शनिवार को दो मैच खेले गए थे। इसमें पहला मैच यंग स्टार ने एडवोकेट को 36 रन से हराया, वहीं एक अन्य मुकाबला टीचर इलेवन ने डीसीए की दिग्गज टीम को 11 रन से हराया।शनिवार की सुबह पहला मैच यंग स्टार ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में पांच विकेट खोकर 179 रन बनाए थे। इसमें नीरज मेहरा ने 28 रन, हेमंत ने 33 रन, छोटू खान ने 59 रन और नदीम खान ने 17 रन की पारी खेली थी। वहीं एडवोकेट की ओर से गेंदबाजी करते हुए अमन ने दो विकेट, पन्ना कीर, गौरव खरे, यामिनी ठाकुर ने एक-एक विकेट हासिल किया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी एडवोकेट की टीम आठ विकेट खोकर 143 रन ही बना सकी। इसमें गौरव खरे ने 37 रन, अमन ने 36 रन और अभय ने 15 रन बनाए थे। इधर यंग स्टार की ओर से गेंदबाजी करते हुए नसीर खान ने तीन विकेट, नदीम-प्रतीक ने दो-दो विकेट के अलावा संजय पेशवानी ने एक विकेट हासिल किया। इसके अलावा दूसरा मैच टीचर इलेवन और डीसीए के मध्य खेला गया। इसमें टीचर इलेवन की टीम 11 रन से विजय रही। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए टीचर इलेवन ने नौ विकेट खोकर 126 रन बनाए थे। इसमें दिनेश ने 14 रन, विजय ने 10 रन, आदित्य गौर ने 26 रन और अजय ने 49 रन की शानदार पारी खेली। इधर डीसीए की ओर से गेंदबाजी करते हुए अमित शर्मा ने चार विकेट, हेमंत केसरिया ने दो विकेट, वरूण शर्मा, वीरु वर्मा और धर्मेन्द्र मेवाड़ा ने एक-एक विकेट हासिल किए।

बहनों के लिए मददगार साबित हो रही लाड़ली बहना योजना

सीहोर (निप्र)। प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं की सहायता के लिए मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना चलाई जा रही है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। इस योजना के तहत महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार दो सौ पचास रूपये की राशि सीधे उनके बैंक खाते में हस्तांतरित की जा रही है। जिसे महिलाएं अपनी आवश्यकतानुसार खर्च कर रही है। सीहोर जिले के ग्राम नयापुरा निवासी श्रीमती चंदा लोधी भी लाड़ली बहना योजना से लाभान्वित महिलाओं में से एक है। श्रीमती चंदा बतातीं हैं कि लाड़ली बहना योजना से मुझे जो राशि मिली है, उसे मैं अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में उपयोग कर रही हूं। श्रीमती चंदा कहतीं हैं कि अब मुझे अपने छोटे-मोटे खर्चों के लिए किसी से पैसे नही मांगने पड़ते। उन्होंनें बताया कि लाड़ली बहना योजना के तहत मिलने वाली राशि मेरे लिए बहुत ही मददगार साबित हो रही है। लाड़ली बहना योजना के लिए श्रीमती चंदा लोधी ने मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव एवं प्रदेश सरकार को धन्यवाद दिया है।

दिव्यांगों को बस किराये में 50 प्रतिशत छूट

सीहोर (निप्र)। राज्य शासन ने प्रदेश की सभी प्रक्रम बस सेवाओं में दिव्यांग व्यक्तियों को 50 प्रतिशत छूट देने के निर्देश दिये हैं। दिव्यांग व्यक्ति को यूडीआईडी कार्ड दिखाने पर यह छूट मिल जायेगी।परिवहन आयुक्त द्वारा प्रदेश के सभी क्षेत्रीय, अतिरिक्त क्षेत्रीय एवं जिला परिवहन अधिकारी को निर्देश दिये गये हैं। दिव्यांग व्यक्ति को दिव्यांगजन सक्षम प्राधिकारी के प्रमाण-पत्र के रूप में केन्द्र या राज्य शासन द्वारा जारी यूनीक डिसऐबिलिटीज आई.डी. कार्ड प्रस्तुत करने पर किराये में 50 प्रतिशत छूट का लाभ दें।केन्द्रीय दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा यूनीक आई.डी. फॉर पर्सन विद डिसऐबिलिटीज (यूडीआईडी) प्रोजेक्ट चलाया जा रहा है। इसमें दिव्यांगों को यूडीआईडी कार्ड दिये जा रहे हैं। कार्ड के माध्यम से दिव्यांग केन्द्र एवं राज्य शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं। यूडीआईडी कार्ड निर्माण में मध्यप्रदेश देश में पहले स्थान पर है।

कार्यालय कलेक्टर (खनिज) जिला सीहोर (म.प्र.)

email-modgmseh@mp.gov.in

क्रमांक/660/ खनिज/2025, सीहोर, दिनाँक 18/02/2025

मध्य प्रदेश गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 18 (1-क) के अंतर्गत उत्खनिपट्टा अनुज्ञप्ति (जो भी लागू हो) प्राप्त करने के लिए,

प्रथम सूचना

यह सूचित किया जाता है कि आवेदिका **मनीता पत्नि श्री अनिल निवासी मंडी रोड सीहोर जिला सीहोर** के द्वारा के द्वारा उत्खनिपटटा अनुज्ञप्ति (जो भी लागू हो) प्राप्त करने हेतु निम्न क्षेत्र पर ऑनलाइन आवेदन क्रमांक 35477 दिनांक 08.01.2025 को प्रस्तुत किये गये है। विज्ञप्ति प्रकाशित होने की तिथी से 30 दिवस तक इस क्षेत्र पर यथा स्थिति उत्खनिपट्टा अनुज्ञप्ति आवेदन ऑनलाईन आमंत्रित किये जाते है। आवेदन ई-खनिज पोर्टल https://ekhanij.mp.gov.in पर प्रस्तुत किये जायेंगे।

आवेदन का संक्षिप्त विवरण

जिला.	तहसील	ग्राम	खसरा नम्बर	रकबा	भूमि का प्रकार शासकीय/ निजी	खनिज का नाम	रिमार्क
सीहोर	सीहोर	धबोटी	13	5.990 हे.	शासकीय भूमि	मुरूम	सम्पूर्ण क्षेत्र में से 4.000 हेक्टयर क्षेत्र पर आवेदन प्रस्तुत किया गया।
			कुल रकबा	5.990 हे.			

1. उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन आवेदन पत्र में आवेदित क्षेत्र के संबंध में अन्य इक्छुक आवेदकों से विज्ञप्ति प्रकाशित होने की तारीख से आवेदन प्रस्तुत करनें की अंतिम तिथी तक (कार्यालयीन समय सांय 5:30 बजे तक) ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है।
2. यदि प्रकाशित विज्ञप्ति के उपरांत आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि तक 03 अथवा उससे अधिक अन्य आवेदकों के आवेदन पत्र प्राप्त होते है, तो प्रथम आवेदन पत्र एवं प्राप्त सथी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण नियम 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।
3. यदि प्रकाशित विज्ञप्ति में उल्लेखित आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि तक 03 से कम आवेदन पत्र प्राप्त होते है तो पुन: 15 दिवस की अवधि आवेदन प्राप्त करने हेतु निर्धारित कर विज्ञप्ति प्रकाशित की जाएगी। विज्ञप्ति प्रकाशन के दिनांक से 15 दिवस के भीतर अन्य आवेदक भी उपरोक्त आवेदित क्षेत्र पर आवेदन प्रस्तुत कर सकेंगे। उपरोक्त अवधि में प्राप्त आवेदन पत्र तथा पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति की अवधि के दौरान प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।
4. यदि प्रथम एवं द्वितीय प्रकाशित विज्ञप्ति के उपरांत भी निर्धारित समयावधि में अन्य कोई आवेदन पत्र प्राप्त नहीं होता है तो प्रथम आवेदक के पक्ष में नियमानुसार खनि रियायत स्वीकृति पर विचार किया जा सकेगा।
5. निर्धारित समयावधि के उपरांत प्राप्त आवेदन पत्रों को विचार में नहीं लिया जाएगा।

जी/23368/24

उप संचालक
(खनिज प्रशासन)
जिला-सीहोर (म.प्र.)

हेलमेट पहनकर वाहन चलायें,अपनी व दूसरों की जान बचायें

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं.21,सेक्टर-एच,इंडस्ट्रियल एरिया,गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा कलेक्ट्रेट के सामने कलेक्ट्रेट रोड सीहोर म.प्र. से प्रकाशित। ब्यूरो प्रमुख -भावना सक्सेना। स्थानीय प्रतिनिधि-मनोज दीक्षित, सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो.9425025999 ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com